परमपिता शिव परमात्मा गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 52, अंक 6, दिसम्बर, 2016
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1.शान्तिवन- हैम रेडियो के रजत जयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, सी.बी.आई.के पूर्व निदेशक डॉ.कार्तिकेयन, एमेच्योर रेडियो संघ के अध्यक्ष भ्राता गोपाल माधवन, वेनेजुएला हैम रेडियो आपरेटर तथा सुप्रसिद्ध आन्कोलोजिस्ट भ्राता रेमोन पेरेज ब्रेट, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.रजनी बहन तथा अन्य। **2.शान्तिवन-** वैज्ञानिक एवं अभियन्ता प्रभाग द्वारा 'वाह जिन्दगी वाह' विषय पर आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, नेपाल के शहरी विकास एवं भवन निर्माण विभाग के उपमहानिदेशक भ्राता मोनीराम गेलाल, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.सरला बहन तथा अन्य।

1.वडोदरा (अलकापुरी)- 'कला संस्कृति महासम्मेलन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.दयाल भाई, हितेश भाई शाह, गुजराती फिल्म अभिनेत्री बहन प्रांजल भट्ट, ब्र.कु.डॉ.निरंजना बहन, ब्र.कु.सतीश भाई, कॉलेज के डीन भ्राता अस्टपुत्रे तथा अन्य। **2.बुटवल (नेपाल)**- ग्लोबल पीस रिट्रीट सेन्टर के अवलोकन के पश्चात् समूह चित्र में हैं स्थानीय विकास राज्यमंत्री भ्राता श्रीप्रसाद जबेगु, निजी सचिव भ्राता उपेन्द्र खनाल, सह-सचिव भ्राता गोपीकृष्ण खनाल, उपमहानगरपालिका के कार्यकारी अधिकृत भ्राता ध्रुव बहादुर खड्का, ब्र.कु.देविका बहन तथा अन्य। **3.दिल्ली (हरिनगर)**- 'गुडबाय डायबिटीज' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मेयर भ्राता श्याम शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के उपकुलपति भ्राता पी.एन.शास्त्री, ब्र.कु.शुक्ला बहन, डॉ.श्रीमंत साहू तथा अन्य। **4.हुक्केरी**- सर्वधर्म सद्भाव संगठन की ओर से ब्र.कु.मृत्युंजय भाई को 'सद्भावना अवार्ड' से सम्मानित करते हुए श्री चन्द्रशेखर स्वामी जी तथा अन्य। **5.गुड़गाँव**- रियो पैरा ओलम्पिक खेल-2016 में शॉट-पुट में रजत पदक जीतने वाली दीपा मलिक को एक हजार, एक सौ ग्यारह गुलाब के फूलों से बना गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.संध्या बहन, ब्र.कु.सोनिका बहन तथा डॉ.दीपक हरके। **6.मौड़मण्डी (बठिण्डा)**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, पंजाब के कैबिनेट मंत्री भ्राता जनमेजा सिंह सेखों, ब्र.कु.कैलाश बहन तथा ब्र.कु.सुदेश बहन। **7.शाहगंज-जौनपुर**- शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए उ.प्र.के ऊर्जा तथा नियोजन मन्त्री भ्राता शैलेन्द्र यादव, ब्र.कु.अनीता बहन तथा अन्य। **8.वाशी (नवी मुंबई)**- 'परमात्म ज्ञान द्वारा स्वर्णिम संसार की स्थापना' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु.शीला बहन, न्यू मुंबई महानगरपालिका महापौर भ्राता सुधाकर सोनावने, विधायक भ्राता संदीप नायक, विधायक भ्राता नरेन्द्र पाटिल, नगरसेवक भ्राता प्रकाश मोरे तथा अन्य।

संजय की कलम से

मृत्यु की पीड़ा क्यों भोगनी पड़ती है?

मृत्यु की पीड़ा से छूटने का पुरुषार्थ ठीक रीति से तभी हो सकता है जब हम ठीक रीति से यह जान लें कि मृत्यु या पीड़ा का कारण क्या है? आप देखते हैं कि इस संसार में जब कोई मनुष्य अन्य किसी के प्रति घातक हिंसा का व्यवहार करता है अथवा अपने देशवासियों के प्रति द्रोह अथवा अहित की भावना से उन्हें दुख पहुँचाता है तो सरकार कानून के अनुसार उसे मौत का दण्ड देती है। इससे स्पष्ट है कि मृत्यु अपने खोटे कर्मों का फल है। इसी प्रकार रोग, दुर्घटना इत्यादि से मनुष्य की जो मृत्यु होती है वह भी ईश्वरीय सरकार के नियमों के विरुद्ध आचरण का फल है। यदि मनुष्य इस लोक में श्रेष्ठ कर्म करे और काम, क्रोधादि विकारों के वश होकर विकर्म न करे तो उसे यह दण्ड नहीं भोगना पड़ेगा।

हम अपने सामने अनेक ऐसे उदाहरण देखते हैं कि ये विकार ही मनुष्य को मृत्यु के मुख में ले जाते हैं। हाथी, काम विकार के वश होकर कागज की हथिनी के पीछे भागता है और गड्ढ़े में जा गिरता है और इस प्रकार सदा के लिए कैदी बना लिया जाता है। भ्रमर, फूल की सुगन्ध पर मोहित होकर उसका रस चूसता रहता है या कोमल पंखुड़ियों में पड़ा रहता है और जब रात हो जाती है और पंखुड़ियाँ बन्द हो जाती हैं तो वह उसके अन्दर मर जाता है। पतंग, रोशनी पर मुग्ध होकर, न आव देखता है न ताव, उस पर जलकर मर जाता है। अत: स्पष्ट है कि कर्मेन्द्रियों के वशीभूत होकर विषयों के पीछे भिखारी के समान भागने वाला मनुष्य भी मौत के मुँह में चला जाता है। अपनी उद्दंडता का परिणाम वह मौत के दण्ड के रूप में पाता है।

देश की सरकार तो अपराधी को मृत्यु से बड़ा दण्ड नहीं दे सकती परन्तु विकारों के कारण दुख देने के रूप में अपराध करने वाले मनुष्य को मृत्यु का दण्ड तो मिलता ही है लेकिन उसके बाद भी उसे गर्भ-जेल भोगनी पड़ती है। इतने से ही उसका छुटकारा नहीं होता बल्कि अगले जन्मों में भी उसे विकर्मों का फल दुख रूप में मिलता है और अन्त में वह धर्मराजपुरी में दण्ड पाता है। अत: विकारों को जीतने से मनुष्य न केवल मृत्यु के समय के कष्ट से बच जाता है बल्कि बाद में गर्भ जेल में मिलने वाले दुख से भी छूट जाता है अर्थात् मुक्ति या जीवनमुक्ति पा लेता है।

‘जीवनमुक्ति का अर्थ क्या है?’

मुक्ति की अवस्था में तो मनुष्य शरीर से ही मुक्त होता है और निष्क्रिय (Inactive) होता है परन्तु जीवनमुक्ति की अवस्था में तो वह देह लेता भी है और देह का कलेवर त्यागता भी है परन्तु इन दोनों में उसे रंचक भी दुख नहीं होता। जन्म और देहत्याग दोनों दुख-रहित और सुख-सहित होते हैं। ❖

अमृत सूची

- मन का मौन *(सम्पादकीय)* 4
- उलझन को सुलझाया बाबा ने 6
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ...7
- जाने वाले को दर्द की ऊर्जा 9
- ‘पत्र’ संपादक के नाम..........10
- बाबा के कमरे में बैठते ही 11
- सर्जरी में सुप्रीम सर्जन का साथ 12
- राजयोग द्वारा प्रकृति 13
- पहले-सा आलसी अब नहीं हूँ..16
- इच्छा छोड़, अच्छे बनें 17
- बाबा ने बचाया हाथ............19
- जीवन के रंग 20
- संविधान - 2 22
- दुआएँ (कविता) 24
- ज्ञानामृत ने बदली जिन्दगी 24
- चेहरे पर नूर और नैनों में 25
- मेरी कलम से..................26
- भगवान कौन? 27
- श्रद्धांजलि 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- ज्ञान की गोली 32
- बाबा की याद 33
- अविस्मरणीय यादें 34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क ‘**ज्ञानामृत**’ के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- ‘ज्ञानामृत’, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com

मन का मौन

हमारा मन लगातार विचार करता रहता है। इसे विचार करने से रोका नहीं जा सकता। हाँ, विचारों की गति धीमी की जा सकती है। इस गति को कम करके, एक मिनट में 2 या 3 या 5 संकल्पों तक ले आना ही मन का मौन कहलाता है जिसे विज्ञान की भाषा में डेल्टा स्थिति कहते हैं। हम शान्ति में बैठते हैं। शरीर की हर इन्द्रिय शान्त हो जाती है। हाथ आपस में जुड़कर या अलग-अलग रहकर भी स्थिर हो जाते है। पाँव, आँखें, मुख – सब स्थिर हैं पर क्या मन स्थिर हुआ। स्थिर तो मन को करना था। शरीर तो उसकी कुर्सी है, वह स्थिर हो गई परन्तु उस पर बैठने वाला भागता रहा तो इसे शान्ति आएगी कैसे?

बहुत कम हैं वर्तमान के क्षण

मन अति सूक्ष्म है। इस सूक्ष्म को स्थिर करना, स्थूल शरीर को स्थिर करने की भेंट में अधिक मुश्किल लगता है। मन स्थिर तब रहे जब यह वर्तमान में रहे। वर्तमान के क्षण बहुत कम हैं। मन इन क्षणों से खिसककर या तो भविष्य या भूतकाल के विशाल क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। भूतकाल की चौड़ी राहों में अनगिनत दृश्य हैं। एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे की ओर भटकते मन को किसी क्रम की भी जरूरत नहीं। बीस मिनट पहले की बात सोचते-सोचते, बीस साल या साठ साल पहले तक पहुँचने में देरी नहीं लगती। भविष्य का क्षेत्र अनिश्चित है। ''शायद ऐसा हो, शायद वैसा हो, नहीं, इस तरह हो जाए, शायद उस तरह हो जाए...'' इस प्रकार आकलन करते हुए मन के समक्ष अनगिनत कल्पनाएँ बनती-मिटती रहती हैं। ये निराधार कल्पनाएँ मन की बैटरी को डिस्चार्ज करने के अलावा कुछ नहीं देती। लेकिन वर्तमान तो निश्चित है, जो हो रहा है, जो करना है वह दिख रहा है। इसमें कल्पना करके जोड़ने या काटने की मार्जिन नहीं। वर्तमान काल क्षणिक है, इसमें मन को स्थिर रखना ही मन का मौन है।

मन को कमान्ड दें, 'सोचो मत'

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा कहती थीं, ''मैं अपने मन को सुला देती हूँ और जब जरूरत होती है, इसका प्रयोग करती हूँ।'' भावार्थ यही है कि मन में आवश्यकता प्रमाण विचार उठें और फिर यह साइलेन्स में चला जाए। ऐसा तब हो सकता है जब हम बार-बार अन्तर्मुखी बनकर अपने मन को देखें कि वह अब क्या कर रहा है। मन बच्चे जैसा है, चंचल अवश्य है पर शैतान नहीं है। जैसे बच्चे जब चंचलता कर रहे हों और कोई बड़ा उन्हें देखने लगे, उन पर नजरें गड़ा ले तो वे स्थिर हो जाते हैं, अपनी शरारतों को रोक देते हैं। हम भी बार-बार भीतर जाकर देखें कि मन कहाँ है, क्या कर रहा है तो (आत्मा की नजरों से बचकर) इसकी भागने की आदत बदल जाएगी। हम बार-बार परखें कि मन जो सोच रहा है क्या वो सचमुच आवश्यक है? क्या उसे सोचे बिना हमारा काम

नहीं चल सकता? इस प्रकार की जाँच-परख करने पर हम पाएंगे कि मन की शक्ति को क्षीण करने वाले 50 प्रतिशत से भी अधिक विचार अनावश्यक हैं। हम उन्हें तुरन्त रोकें। मन को कमाण्ड दें, 'सोचो मत'।

सावधानी हटी, दुर्घटना घटी

मन के अनावश्यक विचार, आवश्यक कार्यों को बाधित करते हैं। इन अनावश्यक विचारों को हम व्यर्थ या लक्ष्य से भटकाने वाले विचार भी कह सकते हैं। हम सुबह दूध लेने डेयरी की तरफ कदम बढ़ाते हैं। कदमों को कमाण्ड मिली, चल पड़े पर मन यह कमाण्ड देकर कहाँ उड़ गया? क्या हमने मन को देखा? वह रास्ते की निर्माणाधीन इमारत, उसके अमेरिका निवासी मालिक, मालिक की असहानुभूति, इमारत के श्रमिक की चोट, श्रमिक की मौत, डॉक्टरों की लापरवाही, अपने बच्चे की अध्ययन में अरुचि... न जाने क्या-क्या सोच गया और डेयरी को लांघकर कई कदम आगे बढ़ गया। क्या सुबह-सुबह ये सब बातें सोचना अनिवार्य था? नहीं, परन्तु मन पर अंकुश नहीं, मन सधा नहीं इसलिए 'इस समय क्या करना है' इस पटरी को छोड़, भूत-भविष्य के रास्तों पर दौड़ पड़ा और दूध लाने का आवश्यक पर छोटा-सा काम लम्बा खिंच गया। मन पर से सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।

वाणी और वीणा

अनावश्यक सोच और परिणामस्वरूप लम्बे खिंचते कर्म हमें थका देते हैं। शारीरिक थकान से ज्यादा भारी पड़ती है मानसिक थकान जो मानसिक उलझनों को जन्म देती है। रिश्तों में डाँट-डपट, कड़वाहट, दोषारोपण का असली कारण हमारा भटकता मन है। इसे भीतर जाकर संवारने की बजाय हम कर्कश वाणी का प्रयोग करते हैं जो सुधार की प्रक्रिया की बजाय और अधिक बिगाड़ की प्रक्रिया सिद्ध होती है। समाधान है मन का मौन जिससे वाणी का मौन स्वत: हो जाता है। भगवान कहते हैं, मन की शान्ति को बढ़ाओ और वाणी की शक्ति (ऊँचे स्वर) को घटाओ। शक्तिशाली मन थोड़ा सोचता है, युक्तियुक्त सोचता है। ऐसा सोच जब वाणी के रूप में प्रकट होता है तो वह वाणी, वीणा का रूप धारण कर लेती है। वीणा के स्वर वातावरण को संगीतमय बनाकर उसमें आह्लाद बिखेरते हैं।

उखाड़ फेंकें व्यर्थ विचारों को

हमने आम का पौधा रोपा। उसकी जड़ों में ढेर सारी खाद डाली। पर यह क्या, सिर के बालों की तरह उस पौधे के चारों ओर खरपतवार उग आई। जो खाद पौधे को मिलनी चाहिए थी, उसे खरपतवार खा गई। एक समझदार माली, बहुत परिश्रम से सारी खरपतवार उखाड़ता है ताकि आम के पौधे की वृद्धि हो। इसी प्रकार हम भी आवश्यक काम को छोड़कर, हंसी-मजाक, पार्टी, बहस या इन्द्रियों के अनावश्यक व्यापार में मन को उलझाकर इसकी शक्ति को जाया कर देते हैं और जब आवश्यक कार्य के लिए तत्पर होते हैं तब अपने को खाली, खोखला और थका हुआ पाते हैं। एक परिश्रमी माली की तरह जिन्दगी के बाग से हम भी व्यर्थ विचारों को उखाड़ फेंकें ताकि आवश्यक कार्यों के लिए समय और शक्ति बची रहे।

लक्ष्य पर केन्द्रित मन हो जाता है स्थिर

यदि मन लक्ष्य पर केन्द्रित है तो इसमें नपे-तुले विचार चलते हैं। हम बाजार से फ्रिज खरीदने जा रहे हैं। मन फ्रिज पर केन्द्रित है। बाजार को पार करते-करते सैकड़ों दुकानें दिखीं, लोग दिखे, सब अनदेखे होते गए क्योंकि मन के साथ तन और उसकी सभी इन्द्रियाँ लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। मन को प्रतिदिन छोटे-छोटे लक्ष्य देकर उन्हें क्रियान्वित करते जाएँ तो मन के मौन जैसा आनन्द मिलता रहेगा। प्राकृतिक वरदान के रूप में गहरी नींद मन को रिचार्ज करने का सुन्दर तरीका है। नींद में यह मन, इन्द्रियों से डिटैच हो जाता है और इसकी उपयोग की गई शक्ति पुन: लौट आती है परन्तु आधुनिक युग में नींद का प्राकृतिक वरदान भी कइयों से छिन जाता है। ऐसे में राजयोग का अभ्यास मन के सशक्तिकरण का बहुत सुन्दर तरीका है। इसके द्वारा मन को साधना, दिशा देना, लक्ष्य पर केन्द्रित करना और संकल्पों की गति को धीमा करना – सब कुछ

सम्भव है। संकल्प जितने शुद्ध, नि:स्वार्थ, कल्याणकारी होंगे, उतने कम और धीमी गति वाले परन्तु शक्तिशाली होंगे।

मौन की पराकाष्ठा

मन में आनन्द का अतिरेक उठता है तो यह नृत्य करता है। मन का नृत्य गुप्त और हानिरहित है। इसमें ध्वनि प्रदूषण या क्रिया प्रदूषण नहीं है। मुहावरा भी है – मन-मयूर नाच उठा... परन्तु कब और कैसे? वह मोर मेघ की गर्जन पर नर्तन करता है परन्तु मन रूपी मयूर तो गर्जन, तर्जन की दुनिया से पार, शान्ति के लोक में विराजमान शान्ति के सागर परमात्मा को निहार-निहार कर नर्तन करता है। उस सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के रूप-माधुर्य का पान करके अलौकिक हर्ष पाता है। जैसे पतंगा दीपशिखा पर मंडराता है, उसी प्रकार पारलौकिक प्रेम की कसक लिए मन-पतंग भी भगवान शिव की परिक्रमा करता है, उसकी शक्तिशाली किरणों में समा जाता है, उस पर कुर्बान हो जाता है। यह मौन की पराकाष्ठा है जहाँ संकल्प कोई नहीं पर ईश्वरीय प्यार और शक्ति की गहन अनुभूति होती रहती है।

राजयोग के अभ्यास से हम भीतर के नेत्रों से परमपिता परमात्मा शिव को परमधाम में देखते हुए, स्वयं को आत्मा स्वरूप में टिकाकर उनके निकट पहुँच जाते हैं और उनके सामीप्य का आनन्द लेते हुए स्वयं को भी उनके समान अनुभव करते हैं। टावर ऑफ पीस (परमधाम) में शान्ति के सागर परमात्मा के साथ कम्बाइन्ड होकर, शान्ति के संकल्पों की ब्रश से सारे ग्लोब की आत्माओं को शान्ति का रंग लगाने का अहसास करते हैं। यह प्रक्रिया लम्बे काल के मन के मौन के अभ्यास से ही सम्भव हो पाती है। समय की माँग है कि हम मन को राजयोग द्वारा निरंतर चार्ज करते रहें ताकि यह वैश्विक शान्ति का वाहक बना रहे।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

उलझन को सुलझाया बाबा ने

ब्रह्माकुमारी राखी, जयपुर

मई, 2013 में टीचर्स ट्रेनिंग के लिए शान्तिवन (आबू रोड) जाने का सौभाग्य मिला। अनुशासन व संयम-नियम के ज्ञान के अभाव में वहाँ जाने के पश्चात् मन-पसंद की दिनचर्या न मिलने से स्वास्थ्य सामान्य न रह पाया। लौकिक विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या मनमर्जी की थी। रात्रि 12-1 बजे तक पढ़ना, तत्पश्चात् सोकर दूसरे दिन सूर्योदय के बाद 10 बजे उठना। न नहाने का नियम, न खाने का नियम और न ही सोने का नियम। शान्तिवन की अनुशासित दिनचर्या में 3.30 बजे प्रात: उठना, अमृतवेले नियत स्थान पर पहुँचना, समय पर नहाना – इन सब नियमों के बोझ के वशीभूत मन हलचल में तो आया ही, साथ ही शरीर को भी बीमार कर बैठा।

एक दिन बुखार इतना बढ़ गया कि सब साथी-बहनें अमृतवेले के योग के लिए चली गयीं पर मैं नहीं जा पाई। मैं सुस्त-पस्त, हैरान और परेशान थी। क्या करूँ? कैसे मैं अपनी प्रशिक्षण-अवधि को सम्पन्न कर पाऊँगी, इस उधेड़बुन में थी कि कब निद्रा देवी ने अपनी गोद में ले लिया, पता ही नहीं चला। घन्टे भर बाद मेरे अवचेतन मन को दो शब्दों के एक वाक्य ने चौंकाया, 'बच्ची उठो।' मैं जागी और अनुभव किया कि किसी का लाइट का हाथ मेरे सिर पर है और बुखार गायब है। आश्चर्य! महसूस हुआ कि बड़े से बड़े सर्जन का इलाज मुझे प्राप्त हुआ है जोकि फरिश्ते स्वरूप ब्रह्मा बाबा को निमित्त बनाकर पूर्ण किया गया है।

इसके बाद 'कैसे प्रशिक्षण काल निर्विघ्न सम्पन्न हो पायेगा', इस विकट उलझन से मैं उबर गई। बाबा ने अबला नहीं, सबला बने रहने की संजीवनी-बूटी मुझे थमा दी। लाख-लाख शुक्रिया बाप-दादा!!

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

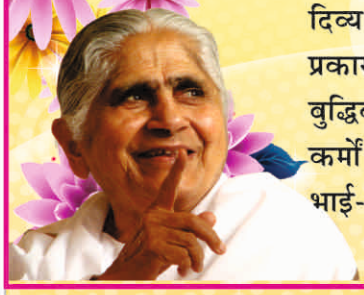

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- निमित्त बनने वालों को क्या ध्यान रखना जरूरी है?

उत्तरः- मम्मा को देख यह नहीं लगता था कि मम्मा ने कोई पुरुषार्थ करके ऐसी स्थिति बनाई है, पर ऐसे लगता था जैसे नेचुरल स्वभाव है। तो ऐसी सहज-सरल नेचुरल स्वभाव वाली स्थिति सदैव बनी रहे। इसमें फिर देखा है, हिम्मत बच्चों की, मदद बाप की। कुछ भी हो जाये, कोई कितनी भी निंदा करे पर हिम्मत और मदद का जो अनुभव है वो शक्तिशाली है। दूसरी बात, सच्चे दिल पर साहेब राज़ी तो क्या करेगा काजी। धर्मराज कुछ नहीं कर सके, ऐसा लायक बनना है। निमित्त बनने में कितना ध्यान रखना जरूरी है क्योंकि और बहनें फॉलो करती हैं, नहीं तो एक-दो की शिकायत करते हैं। शिकायत मेरी कोई करे, यह भी अच्छा नहीं है या मैं किसकी करूँ, यह भी ठीक नहीं है। ऐसा दिन कभी न आये। सेन्टर भी यज्ञ है, उस भावना से सेन्टर को चलाना और सम्भालना है। बाबा ने यज्ञ रचा है तो यज्ञ सेवा अर्थ सब कुछ कर रहे हैं, यह भावना हो। ऐसा सेवा का फल मिल जाए जो सब सहज हो जाये, खुद निश्चिंत रहें। साधारणता न हो। कोई भी मुझे खींचे नहीं, न मुझे किसी की खींच हो। सूक्ष्म बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त, जैसे वर्से में बाबा से ये दोनों चीज़ें मिली हैं।

प्रश्नः- कर्मातीत बनने के लिए क्या करना है?

उत्तरः- विदेही की ऐसी प्रैक्टिस हो जो देही-अभिमानी स्थिति से ट्रस्टी बनना सरल हो। कौन हैं जो ऐसी स्थिति में रह करके बाबा की यादों में रहते जीवन जीते हैं? विकर्माजीत बनने वाले को बहुत अटेन्शन रखना होता है। फिर कर्मातीत बनने के लिए बाप को फॉलो करना है, तो घड़ी-घड़ी बाबा को सामने देखते रहो। शिवबाबा ने कैसे ब्रह्मा तन में आ करके विकर्माजीत-कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति में रहना हम सबको सिखाया है। कभी भूल से भी कोई भूल न हो, छोटी भी भूल न हो। मैं कौन, मेरा कौन, यह कभी भूले नहीं। आप सब को सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द सब कुछ मिल गया है ना! पहले सुख भाई है, फिर शान्ति बहन है। सुख है बेटा, शान्ति है बेटी, इन दोनों की माँ कौन है? पवित्रता। जिसने पवित्रता को अच्छी तरह से समझा और अपनाया है, वह जीवन में सुखी-शान्त रहते हैं। बाबा ने कैसे एक धक से सब समर्पण कर लिया! बहुत अच्छा व्यापारी था, सब कुछ अच्छा था परन्तु जब देखा कि सतयुग की राजाई मिल रही है तो सोचा, यह क्या करेंगे? आप सब भी बाबा के बच्चे हो ना, तो क्या चाहते हो? मेरा हर कर्म बलवान हो। बाबा सर्वशक्तिवान है, कर्म बड़े बलवान हैं। बाबा ने अच्छे कर्म करने सिखाये हैं। मुझे बड़ा अच्छा लगता है देही-अभिमानी स्थिति में रहना। देही-अभिमानी स्थिति में रहना माना मालिक भी हैं, सेवाधारी भी हैं। हमको बाबा सिखाता है, कैसी भी परिस्थिति है, घबराना नहीं है। कोई बात में चलायमान भी नहीं होना है। अचल-अडोल बनने से बाबा को फॉलो कर सकते हैं। बाबा ने ऐसी शक्ति दी है जो कुछ भी हो जाये, पर हम बाबा

के बच्चे सदा ही न्यारे और प्यारे हैं। ऐसा न्यारा और प्यारा बनने से सुख मिलता इलाही है।

प्रश्नः- एंजिल बनना है तो क्या करें?

उत्तरः- एंजिल बनना है तो लव ऐसा हो, जो सब कहें कि ये कहाँ से आये हैं! इनका आपस में प्यार देखो कितना है। बाबा ने जो प्यार दिया है, उसने दिल को सच्चा बना दिया है। जो भी पार्ट मिला है उसको भाग्य समझके ऐसा बजा रहे हैं, जो कदम-कदम में पदमों की कमाई है। नियम-मर्यादा अनुसार पार्ट बजा रहे हैं। मर्यादा कभी नहीं तोड़ें क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी। कोकोकोला भी नहीं पीना चाहिए। ऐसे ढीला-ढाला नहीं बनना है। अगर नियम-मर्यादा में ढीला-ढाला रहेंगे तो कदम-कदम पर भाग्यवान नहीं बन सकते। हमको तो कदम-कदम में पदमों की कमाई करके भाग्यवान तो क्या पदमापदम भाग्यवान बनना है। बिन्दी लगाते जाओ, भाग्य बढ़ाते जाओ। बिन्दी लगाने में देरी नहीं लगती है। एक बाबा बिन्दी बड़ा पावरफुल है। सदा सन्तुष्ट, सदा स्नेही, सदा सच्चा, सदा सहयोगी, ऐसा लक्ष्य रखने से फिर परिवर्तन होता जाता है। अपने को चेक करने की लगन की अग्नि चाहिए, वो अग्नि जलाती नहीं है, वो अग्नि बड़ी अच्छी है। लगन की अग्नि तेज काम करती है, पुरुषार्थ में ठण्डे नहीं बनो।

प्रश्नः- सदा ही ध्यान में रखने वाली बातें कौन-कौन-सी हैं?

उत्तरः- सदा ही ध्यान में रखने वाली मुख्य बात यह है कि कभी भी ऐसी कोई बात न हो जो कांध नीचे हो जाए। पश्चाताप न करना पड़े, ऐसी स्थिति अन्दर बनानी है। कभी भी कोई भी भूल मेरे से ऐसी न हो जो बाबा को याद करें तो बाबा माफ भी न करे। बाबा कहते हैं, मैं क्षमा नहीं करता हूँ, माफ नहीं करता हूँ। बाबा कहते हैं, जो किया, आगे नहीं करूँगा, यह प्रतिज्ञा करो। पश्चाताप के बदले प्रतिज्ञा करो कि ऐसी भूल मेरे से फिर कभी नहीं होगी। सदा ही अपने को आपेही सावधान रखना। बिना सावधानी के कुछ नहीं प्राप्त हो सकता है। अभी ऐसे सावधान रहने में बाबा भी खुश, परिवार भी खुश, दादियाँ भी खुश, जो भी मिलेंगे और जहाँ भी रहेंगे वो खुश कि यह सावधान रहने वाला, औरों को भी सावधानी से चलने-चलाने में मदद करने वाला है। कुमारों को तो बहुत ध्यान रखना है। पहले है पवित्रता, फिर है सत्यता, फिर धैर्य। जब पवित्रता और सत्यता है तो जल्दी कोई बात में अधैर्य नहीं होते हैं। फिर हैं नम्रता और मधुरता। ये पाँच बातें सदा ही ध्यान पर रखने से जीवन में लाइट रहते हैं जिससे माइट भी बाबा देता है क्योंकि यह बाप कल्प में एक ही बार मिलता है। वो सबका एक ही बाप है, हम एक के हैं, एक के रहेंगे और एक ही साथ घर में चलेंगे। बारात में नहीं जाना है।

आत्मायें शरीर से न्यारी हैं तो न कुमारी हैं, न कुमार हैं। रॉयल्टी से बाबा के साथ जाना है, ऐसी स्थिति बनानी है। इसके लिए बहुत अच्छा है, सेकेण्ड में साइलेंस में चले जाओ। साइलेंस में अपने को बाबा के साथ देख आत्मा लाइट बन जाती, माइट बाबा से मिल जाती। वन्डरफुल बाबा है। लौकिक कौन है, कैसा है, कहाँ है, हमको पता नहीं। बाबा ने हमें पहले अपनी गोद बिठाया, फिर गले लगाया और कहा, बच्चे, 108 की माला में आना हो तो एक बाबा याद हो, फिर जो बात सामने आये उसको लगाओ बिन्दी और आठों शक्तियों को साथ रखो।

प्रश्नः- मुरली अन्दर चली जाए, उसके लिए विधि क्या है?

उत्तरः- जब तक बाबा मुरली चला रहा है, हिलना नहीं है। एकाग्रता से सुनते हुए उसी समय उसकी शक्ति भर लेनी है क्योंकि ऐसे वायुमण्डल में जो बात दोनों कानों द्वारा ध्यान से सुनते हैं, वो अन्दर चली जाती है, नहीं तो एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देते हैं। दोनों आँखों के बीच में आत्मा चमकती हुई स्टार मिसल बैठी है। ज्ञान सूर्य बाबा है, चन्द्रमा मेरी माँ है। सूर्य की सकाश मिल रही है, चन्द्रमा शीतलता दे रहा है। मम्मा ने भी बहुत प्यार से आगे बढ़ाया है।

जाने वाले को दर्द की ऊर्जा न भेजें

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुड़गाँव

मैं एक ऐसी माँ से मिली जिसके 21 साल के बेटे की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी थी। उनका बेटा किसी दूसरे देश में रहता था। उसने कहा, बेटे के साथ मेरा इतना मजबूत संबंध था कि अगर मैं यहाँ उदास होती तो उसको वहाँ पता चल जाता था और यदि उसके साथ कुछ होता तो यहाँ मुझे पता चल जाता था। हम तुरंत एक-दूसरे को फोन करते और पूछते, सब ठीक है, कुछ हुआ तो नहीं है? अब वो बच्चा, वो आत्मा कहीं और चली गयी। माँ रोज रोती है, बहुत रोती है। मैंने कहा, अब उस आत्मा ने दूसरा शरीर ले लिया लेकिन क्या वो संबंध समाप्त हो गया, क्या उस ऊर्जा की लेन-देन खत्म हो गयी होगी? समझने की जरूरत है कि वो आत्मा अब एक दूसरे शरीर में, माता के गर्भ में है। अभी वह एक नन्हा-सा शिशु है। वह अभी आपको फोन नहीं कर सकता है, आपसे बात नहीं कर सकता है परंतु अगर पहले वो आपके एक-एक दर्द को ऐसे ही समझ जाता था तो क्या अब वह नहीं समझेगा? अभी भी समझेगा। यहाँ आप इतना रो रहे हैं... इतना रो रहे हैं...उस आत्मा को याद करके तो उस आत्मा तक आपके दुख के प्रकम्पन तो पहुँच ही रहे हैं।

ऊर्जा का आदान-प्रदान शरीर और शरीर के बीच नहीं, आत्मा और आत्मा के बीच होता है। अब जब हम रो रहे हैं तो दर्द की ऊर्जा निर्मित कर रहे हैं। यह वहाँ जायेगी, उस आत्मा तक जिसके लिए यह निर्मित की गई है। अगर हम अपने आपको प्यार से और तार्किक रूप से समझायें कि जब वो आत्मा यहाँ थी तो मैं कुछ भी करती लेकिन उसे अपने दुख में शामिल नहीं होने देती और आज मैं ही बैठकर उसको क्या भेज रही हूँ? मैं दर्द भेजती जा रही हूँ सिर्फ इसलिए कि वो मेरे सामने नहीं है। हमें ये नहीं मालूम कि उस आत्मा के ऊपर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। मुझे अपना ध्यान नहीं रखना है लेकिन उस आत्मा की शान्ति के लिए अपना ध्यान अवश्य रखना ही पड़ेगा।

जो ऊर्जा हम भेज रहे हैं उस उर्जा को वो ग्रहण कर रहा है। ऊर्जा ऐसी चीज है, आप जिसके प्रति निर्मित करेंगे, वो उस तक जरूर पहुँचती है। हम उन सब लोगों की ऊर्जा से प्रभावित हो जाते हैं जो हमारे आस-पास हैं। अगर कोई कहीं और भी है लेकिन वो जो ऊर्जा भेज रहे हैं उसका प्रभाव हमारे ऊपर अवश्य पड़ता है।

माता-पिता, पति-पत्नी के रूप में जो भी हम हैं, हम ये तो कह देते हैं कि अमुक संबंधी के देहत्याग के कारण हम खुश रह ही नहीं सकते लेकिन हम जितनी बार दर्द पैदा करेंगे, अपने को तो दर्द देंगे ही, साथ-साथ उस सम्बन्धी को भी भेजेंगे। यदि बच्चा कहीं और है और वो हमें दूसरे शहर से फोन करता है और पूछता है कि घर पर सब कुछ ठीक है? हम कहते हैं, हाँ...हाँ... सब ठीक है। हो सकता है, घर पर दस समस्याएँ हों लेकिन हम बच्चे को कभी नहीं बताते। इसके पीछे हमारा उद्देश्य होता है कि वो जहाँ है, व्यवस्थित हो जाये। उसी प्रकार से अब वो आत्मा दूसरी जगह है। हमारी शुभ-भावना क्या होनी चाहिए कि वो जहाँ पर भी है, वहाँ पर अच्छी तरह से व्यवस्थित हो जाये। हमने कहा कि वो चले गये हैं लेकिन हमें ये पता नहीं है कि वो अभी भी हैं। वो चले तो गये पर कहीं तो हैं ना। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

सितम्बर, 2016 अंक बहुत अच्छा लगा। पत्रिका जीवन में शान्ति, क्षमा का भाव पैदा करती है। अपना विकास शान्ति में है। गुस्सा तो जीवन को कष्ट देता है। मुझे यह पत्रिका पढ़कर शान्ति मिलती है।

– कमल कुमार आर्य, कुचामन सिटी (राज.)

सितम्बर, 2016 अंक में 'फैशन की बढ़ती महिमा, नारी की गिरती गरिमा' यह सुंदर लेख पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ। नारी के हाथों में तकदीर की डोर है। वह मानवता को अच्छी सीख देकर संसार को स्वर्ग बना सकती है। परमपिता परमात्मा शिवबाबा कहते हैं, हे नारी, तू गुणों का शृंगार कर। सच्ची प्रशंसा प्राप्त करने का आधार आत्मिक सौंदर्य है।

– लालजी भाई गोवेकर, मेहकर (महाराष्ट्र)

'ज्ञानामृत' पत्रिका ज्ञान का अथाह भण्डार है। इसका हर अंक जीवनोपयोगी जानकारी प्रदान करता है। सितम्बर अंक दिल को छू गया। सम्पादकीय 'देने वाला है देवता' भारतीय संस्कृति के आदिकाल के बारे में बताता है और सिखाता है कि आप दाता के बच्चे हैं, देने वाले हैं, लेने वाले नहीं। 'प्रतिशोध नहीं, आत्मशोध' अंतर्मन को स्पर्श कर गया जो हमें सिखाता है कि बदला लेने की बजाय हम खुद को बदलकर दिखायें। इससे हम अपनी अनेक समस्याओं को बदल सकते हैं। विश्वास में हजार गुना शक्ति होती है। स्वयं पर और उस सर्वशक्तिमान पर अटल विश्वास हमें हर परिस्थिति से मुकाबला करने की हिम्मत देता है तथा खुशी और स्वास्थ्य प्रदान करता है। इतनी बेशकीमती जानकारी के लिए हम आपको तहेदिल से धन्यवाद देते हैं।

– गायत्री वर्मा, अलीराजपुर (म.प्र.)

सितम्बर, 2016 का सम्पादकीय लेख 'देने वाला है देवता' बड़ा ही मर्मस्पर्शी है। यह हमारे देव स्वरूप की स्मृति को जागृत करता है। जब हम किसी को कुछ देते हैं तो सबसे ज्यादा खुशी होती है। इसके लिए अमीर होना आवश्यक नहीं है। हम गरीब होकर भी सभी को शुभकामनायें व शुभभावनायें तो दे ही सकते हैं। यह सबसे बड़ा दान है। इससे हम अपना और दूसरों का भला कर सकते हैं। सृष्टि के संचालन तथा शरीर के संचालन का आधार देना है। हम दाता, वरदाता के बच्चे हैं। हमें दाता बनना है। ज्ञानामृत के सभी लेख मूल्यों पर आधारित होते हैं। संपादक जी का हृदय की गहराई से कोटि-कोटि धन्यवाद।

– देवेन्द्र सिंह, नरेला (दिल्ली)

ज्ञानामृत में सचमुच ही ज्ञान का अमृत भरा हुआ है। पत्रिका को पढ़कर एक सुखद आनंद की अनुभूति हुई। मन शांत हो गया और नये जोश एवं उमंग का संचार हुआ। सितम्बर, 2016 अंक में 'दैवी संस्कृति और भौतिक संस्कृति', 'देने वाला है देवता' पढ़कर बहुत कुछ सीखने को मिला। 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' में दादी जी के सटीक जवाब मन को भा गये। 'फैशन की बढ़ती महिमा, नारी की गिरती गरिमा' सचमुच ही संदेशपरक लेख है। 'क्षमा भाव और साक्षी भाव' तथा 'पूजा के रहस्य' पढ़कर बहुत ही ज्ञान की प्राप्ति हुई। इसके लिए संपादक मंडल और सभी साथियों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

– महेन्द्र देवांगन 'माटी', बोरसी-राजिम (छत्तीसगढ़)

बाबा के कमरे में बैठते ही परिवर्तन हो गया

ब्रह्माकुमार पांडुरंग, पूर्व सैनिक, सुखवाडी, सांगली (महाराष्ट्र)

मैं 26 साल (1967-1993) भारतीय सेना में सेवा कर निवृत्त हुआ, इसके बाद एक प्लास्टिक का कारखाना प्रारम्भ किया। सन् 2000 में कारखाने में चोरी हुई और मुझ पर तीस लाख का कर्जा हो गया। कारखाना ठीक न चलने के कारण कर्ज उतर नहीं रहा था इसलिए कर्ज देने वाली संस्था तथा बैंक ने मुझ पर केस कर दिया। पुलिस वाले आकर पैसे मांगने लगे, मैंने कारखाना बेच दिया। थोड़ा कर्ज उससे चुका दिया पर काफी कर्ज अभी बाकी था।

रहने लगा परिवार से बेपता

बचे हुए कर्ज के कारण पुलिस वाले तंग करते रहे, आखिर परिवार को गाँव में ही छोड़कर मैं मुम्बई आ गया, मैंने अपना नाम बदल लिया और परिवार से भी बेपता रहने लगा। मुम्बई के एक कारखाने में नौकरी शुरू की, कारखाने के सेठ जी कहते थे, अपनी पत्नी को भी लेकर आओ। मैंने उन्हें बताया कि मेरा कर्जा बहुत है, गाँव जाने से मुझे बहुत परेशानी होती है इसलिए ना पत्नी को लाऊँगा, ना ही गाँव में जाऊँगा।

चरित्र गया तो सब कुछ गया

इसके बाद सेठ जी के कहने से एक देवऋषि ने मेरी हस्तरेखा देखी और कहा, दूसरी शादी कर लो, इससे सारा कर्जा उतर जाएगा और तुम सुखी हो जाओगे (विचार कीजिए, एक पत्नी के होते जो कर्ज नहीं उतरा, दूसरी लाने से कैसे उतर जाएगा?)। सेठ जी ने मत दी, यहीं शादी कर लो, इस कारण मैं वेश्यालय में जाकर बहुत धन खर्च करने लगा और दूसरी शादी का निश्चय कर लिया। मैं जिस मकान में किराए पर रहता था उसकी मालकिन इंकू माता जी मुझे बार-बार ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर चलने का निमंत्रण देती थी। आखिर उनके कहने से दहिसर (मुम्बई) के आनन्द नगर स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा में चला गया। निमित्त बहन ने मुझे ईश्वरीय ज्ञान का सात दिन का कोर्स करने को कहा, 12-12-2005 को मुझे कोर्स का पहला पाठ एक घण्टा पढ़ाया गया और बाद में योग-कक्ष (बाबा का कमरे) में बिठाया गया। तब मेरी बुद्धि में विचार आने लगे जैसे कि कोई मुझे समझा रहा है, बच्चे, ध्यान से सुनो, 'तुम्हारा धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, चरित्र गया तो सब कुछ गया, शादी से और बरबादी होगी।' इन शब्दों का मेरे पर तुरन्त असर हुआ। उसी दिन से मैंने शराब पीना, माँस खाना, वेश्यालय में जाना छोड़ दिया और दूसरी शादी का विचार भी त्याग दिया। इस प्रकार बाबा के कमरे में पहली बैठक ने ही मुझे पवित्र बना दिया।

सारा कर्जा उतर गया

सात दिन के कोर्स के बाद प्रतिदिन मुरली क्लास में जाने लगा। इंकू माता जी ने मुझे युगल को लाने को कहा, मैंने निमित्त बहन को अपनी परिस्थिति बताई तो उन्होंने कहा, भाई, कर्जा अब अपना मत समझो, बाबा का समझो और हमेशा खुशी में रहो। तब से मैं निमित्त बहन को दिल से अपनी माँ ही मानता हूँ। फिर मेरी युगल भी मुम्बई आ गई, उसने भी ज्ञान सीखा और शाकाहारी बन गई। सन् 2006 में हम बाबा से मिलने आबू गए और बाबा को कर्जे की बात बताई। बाबा के मार्गदर्शन से सारा कर्जा उतर गया। पुत्र ने पहले जैसा कारखाना चालू कर लिया। मुझे हर मास 21000 रुपये पेंशन मिल रही है, मकान बनाने के लिए भी जमीन मिल गई है। यह सब बाबा की ही कमाल है।

किसी से भविष्य नहीं पूछना

सभी भाई-बहनों को कहना चाहता हूँ कि आप या आपके कोई भी मित्र-सम्बन्धी कभी भी किसी सन्त, गुरु,

ऋषि से भविष्य के बारे में नहीं पूछना। मेरी लौकिक माँ ने मेरे दुख दूर करने के लिए, एक तथाकथित गुरु के कहने से, चार मुर्गे मेरे शरीर पर घुमाकर, जंगल में जाकर काट दिए, फिर भी मेरी मुसीबत दूर नहीं हुई, और ही बढ़ गई। सबको बताओ कि नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाओ तभी मुसीबतें दूर होंगी और खुशी का जीवन मिलेगा।

बाबा के सिवाय कोई नहीं कर सकता

थोड़े से कर्ज के कारण कई भाई-बहनें आत्महत्या कर लेते हैं, ऐसा कर्म कोई ना करे। प्यारे बाबा ने मेरा 30 लाख से भी ज्यादा कर्ज उतरवाया, पूरे परिवार को सुख देने के निमित्त बनाया और परिस्थितियों में से गुजरने से मुझ में मधुरता और सहनशीलता जैसे गुण आ गए। बाबा ने ही मेरा चरित्र बदलकर मुझे पवित्र बनाया है, यह सेवा बाबा के सिवाय कोई नहीं कर सकता इसलिए दिल से निकलता है, वाह बाबा वाह! वाह मेरा भाग्य वाह! ❖

सर्जरी में सुप्रीम सर्जन का साथ

ब्रह्माकुमारी अंगूरी देवी, दशेरपुर, चीका (हरियाणा)

मैं पिछले 6 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान-मार्ग में हूँ। बचपन से ही भक्ति में, पूजा-पाठ में काफी रुचि थी। सन् 2010 में मैं पूरे परिवार में अकेली ही ज्ञान-मार्ग पर चली। घर के सदस्य सहयोग देना तो छोड़िए, गलत बातें बोलते थे लेकिन मैंने कभी भी धैर्य नहीं खोया। लौकिक पति के शरीर छोड़ने के बाद भी पूरे परिवार को सम्भाले रखा। घर के सभी सदस्यों की मनसा सेवा करते हुए बाबा की याद में खाना बनाना शुरू किया। परिणाम जल्दी ही सामने आया। आज लगभग पूरा परिवार ईश्वरीय ज्ञान में है और घर में ही गीता पाठशाला खुल गई है। प्रतिदिन मुरली क्लास चलती है। घर का हर सदस्य बहुत सहयोग करता है। दो बार बाबा मिलन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

जीवन का सबसे बड़ा अनुभव प्यारे बाबा ने तब करवाया जब मैं कान की सर्जरी करवाने पेहवा (हरियाणा) गई। जब मुझे ऑपरेशन कक्ष में ले जाने लगे तब मैंने अपना पूरा तन सुप्रीम सर्जन को सौंप दिया और जरा भी घबराई नहीं। ऑपरेशन के दौरान मेरा खुश चेहरा देखकर सब डॉक्टर हैरान थे। जैसे ही बड़े डॉक्टर ने कक्ष में प्रवेश किया, मेरे कुर्ते पर लगा शिवबाबा का बैज देखकर उन्होंने उसे उतारने को कहा। मैंने मना किया और प्यारे बाबा का पूरा परिचय उन्हें दिया। डॉक्टर ने मेरी भावनाओं को समझा और बैज उतारने को फिर नहीं कहा। जैसे ही ऑपरेशन शुरू हुआ, मैं फरिश्ता स्वरूप में पाण्डव भवन (माउंट आबू) पहुँच गई। मुझे ब्रह्मा बाबा और मधुबन की सभी दादियाँ (जिनको मैंने देखा है) दिखाई दीं। यह एक अद्भुत दृश्य था। ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में शिवबाबा मुझे बहुत प्यार से निहार रहे थे। पूरा कमरा मानो लाल रंग से प्रकाशित था। अन्दर में खुशी का पारा मेरे चेहरे पर साफ दिखाई दे रहा था। निमित्त बहनें और स्वयं शिवबाबा मानो मेरे सुरक्षा कवच बनकर मुझे सकाश दे रहे थे। ऑपरेशन साढ़े तीन घण्टे चला, बाबा ने जरा भी दर्द का अहसास नहीं होने दिया। जितनी बार भी मीठे बाबा का शुक्रिया करूँ, कम है। ❖

23 दिसम्बर किसान दिवस पर विशेष...

राजयोग द्वारा प्रकृति और व्यक्ति का चमत्कारिक परिवर्तन

ब्रह्माकुमारी दर्शना कारापुरकर, मापसा (गोवा)

सन् 2009 में मैं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू, राजस्थान में ग्राम विकास प्रभाग की मीटिंग के लिये गई थी। वहाँ मुझे शाश्वत यौगिक खेती के अन्तर्गत कई अनोखी बातें जानने को मिलीं जैसेकि मनुष्य के समान पेड़, पौधे, पशु, पंछी भी भावनाओं को समझते हैं। स्वार्थ-भाव और रासायनिक खाद के इस्तेमाल से प्राप्त अनाज जहरीला होता है। जैसे एक बच्चे की अच्छी परवरिश के लिये भोजन के साथ स्नेह की भी जरूरत होती है, वैसे ही पेड़-पौधों को जैविक खाद के साथ अगर राजयोग के अभ्यास द्वारा परमात्म शक्ति के शुद्ध, शक्तिशाली प्रकंपन दें तो बहुत अच्छी उपज प्राप्त होती है। उत्पादन ज्यादा मिलने के साथ-साथ क्वालिटी अच्छी होती है, आकार बढ़ता है, चमक आती है और पौष्टिकता भी ज्यादा मिलती है। जमीन में सूक्ष्म जीवाणु बढ़ते हैं। पर्यावरण में शुद्ध और शक्तिशाली प्रकम्पन फैलने से कीट या रोग नियंत्रण प्राकृतिक पद्धति से होता है। साथ में यह भी सुना कि जमीन चाहे कैसी भी हो, बीज चाहे कैसा भी हो लेकिन जहाँ परमात्म शक्ति है, वहाँ खेती तो होनी ही है। यह सुनकर मैंने तुरंत फैसला कर लिया कि आज के बाद अपनी खेती में कभी भी रासायनिक खाद का इस्तेमाल नहीं करूँगी।

चीकू और चावल पर प्रयोग

मधुबन से आते ही सबसे पहले चीकू के एक पेड़ पर योग का प्रयोग करना शुरू किया। उस काफी पुराने वृक्ष पर एक भी चीकू नहीं लगता था। रोज़ सवेरे अमृतवेले 10/15 मिनट घर में बैठकर ही इस पेड़ के लिये विशेष योगदान देना (शुद्ध संकल्प से प्रकम्पन देना) शुरू किया कि तुम कितने अच्छे हो, कितने बड़े हुए हो, कितनी अच्छी छाँव देते हो। हम यह भी जानते हैं कि तुम पर कोई फल नहीं लगता इसलिये तुम दु:खी हो और हमारे परिवार वाले भी तुमसे नाराज़ हैं। उन्होंने तुम्हें काटने का फैसला किया है लेकिन अब तुम बिल्कुल घबराओ नहीं। प्रकृतिपति परमात्मा स्वयं तुम्हारे लिये इस धरती पर आये हैं। देखो, तुम्हारे ऊपर उनसे कितनी पवित्र, शुद्ध, शक्तिशाली किरणें फैल रही हैं। इस तरह के संकल्पों के साथ मैंने रोज़ मन-बुद्धि से यह चित्र देखना शुरू कर दिया कि पूरे पेड़ पर बहुत सारे चीकू लगे हैं।

कुछ महीने के बाद जब चीकू का मौसम आया तो पूरे पेड़ पर बड़े-बड़े चीकू लगे। यह देखकर मुझे और मेरे परिवार को बड़ा आश्चर्य और खुशी हुई। फिर मैंने चावल की खेती पर योग का प्रयोग किया। बीज को 5 दिन राजयोग द्वारा शुद्ध-शक्तिशाली प्रकम्पन देकर अंकुरित होने के लिये खेत में थोड़ी-सी जगह पर डाल दिया। ऐसे वक्त पर कबूतर और चिड़ियों का झुण्ड बीजों को चुगने के लिये आता है लेकिन उनसे संकल्प शक्ति से दोस्ती कर उनको बताया कि यह शाश्वत यौगिक खेती है जिसे देखकर दूसरे किसानों को भी परमात्म शक्ति का अनुभव होगा और पर्यावरण शुद्ध रखने में मदद मिलेगी। इसके लिये आपको हमारी खेती पर बीज नहीं चुगने हैं और सचमुच आस-पास के किसान यह देखकर चकित हो गये कि ये छोटे-छोटे पंछी आस-पास की खेती के बीज चुगकर चले गये, हमारी खेती में उन्होंने कोई नुकसान नहीं किया।

खेती आपकी नहीं, परमात्मा की है

इस बार मैंने खेती में कोई रासायनिक खाद नहीं डाली, सिर्फ गाय का गोबर डाला। इस वजह से पड़ोसी किसान महिलायें कहने लगीं कि अगर रासायनिक खाद नहीं डालोगी तो खेती में धान नहीं उगेगा। साल भर के अनाज का क्यों नुकसान करती हो? क्या साल भर चावल खरीदकर खाओगी? इन बातों को सुनकर मेरा मन घबरा गया। कई तरह के अशुद्ध विचार चलने लगे कि अगर ठीक से धान नहीं उगा तो क्या होगा? सब लोग मुझे हँसेंगे। क्या करूँ, समझ में नहीं आ रहा था। मेरे व्यर्थ और चिंताग्रस्त विचारों का असर पूरी खेती पर दिखने लगा, वह धीरे-धीरे झुकने लगी, सूखने लगी और मैंने जान लिया कि अब तो यह खत्म हुई। मायूस होकर मैंने कोल्हापुर की ब्रह्माकुमारी मनीषा बहन को फोन किया जिन्होंने यौगिक खेती के लिये प्रेरित किया था। मेरी बातों को सुनकर उन्होंने कहा कि सबसे पहले अपने व्यर्थ संकल्पों को रोक दो। खेती आपकी नहीं, परमात्मा की है। स्वयं भगवान इस खेती का रक्षक है। ऐसी भावना से मन को हल्का कर, दृष्टि देकर यह चित्र देखो कि सारी फसल हरी-भरी हुई है और बहुत अच्छे से बढ़ रही है। ये बातें सुनकर मेरा मन फिर से निर्भय, निश्चिंत हो गया और फसल को परमात्म शक्ति के प्रकम्पन देने शुरू किये। इसके साथ ही पूरी खेती में सप्त-धान्यांकुर अर्क का छिड़काव किया जो सात तरह के अनाजों को अंकुरित करके बनाया जाता है जिसके लिये खर्चा भी बिल्कुल कम होता है। धैर्य और परमात्म शक्ति का असर बहुत जल्दी ही देखने को मिला। सारी फसल 15 दिन होते-होते फिर से हरी-भरी हो गई, खुशी से झूमने लगी। इस तरह संकल्प शक्ति की करामात के कई अनुभव प्राप्त हुए।

सरकारी जमीन पर
यौगिक खेती करने का निमन्त्रण

कृषि-कृषक और समाज को स्वस्थ-खुशहाल बनाने वाली यौगिक खेती के प्रसार हेतु गोवा सरकार के कृषि विभाग के सहयोग से ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर एक दिन का प्रशिक्षण शिविर रखा गया जिसमें कई कृषि अधिकारी शामिल हुए। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद एक अधिकारी श्री संजीव मयेकर जी ने कहा, ऐसा कभी हो सकता है क्या? सिर्फ अपने संकल्पों से अच्छी फसल कैसे ले सकते हैं? क्या आप हमें सरकारी जमीन पर यह खेती करके दिखा सकते हो? परमात्म शक्ति के अनुभव से हमने तुरंत हाँ कर दी। दूसरे ही दिन निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन और राजयोग के कुछ अभ्यासियों का एक ग्रुप लेकर हम उस जमीन पर गये। उस एक एकड़ जमीन पर सिर्फ 12 दिन के चावल के पौधे एस.आर.आई. पद्धति से लगाये हुए थे। उसी में से ही करीबन 300 चौरस मीटर का एक प्लाट दिखाकर उन्होंने कहा कि आज से यह प्लाट ब्रह्माकुमारीज़ का माना यौगिक खेती का है। आपको यहाँ कोई खाद नहीं डालनी है, संकल्प शक्ति से खेती करके दिखाओ।

यौगिक उपज हुई रासायनिक उपज से ज्यादा

सबसे पहले हम लोगों ने परमात्मा पिता का लाल, पीला झण्डा इस खेती में लगाया। इससे भी खेती को बहुत फायदा होता है क्योंकि लाल रंग पॉजिटिव एनर्जी को खींचता है और पीले रंग को देखकर, उसे फूल समझकर कीट उस पर अण्डे डालते हैं। जब हवा में झण्डा लहराता है तो ये अण्डे जमीन पर गिर जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं और फसल की कीटों से रक्षा हो जाती है। फिर रोज़ सवेरे और शाम घर बैठे ही 10-15 मिनट शुद्ध-शक्तिशाली प्रकम्पन उस प्लाट को देने शुरू किये। कोई भी प्रकार की खाद नहीं डाली। खेती में 15 दिन में एक बार जाकर प्रकम्पन दिए। धीरे-धीरे धान के पौधे बड़े हुए और तीन महीने बाद फसल काटने लायक हुई तो वे अधिकारी बोले कि चलो पूरी खेती में चक्कर लगाते हैं। चक्कर लगाते हुए जब यौगिक खेती के प्लाट पर आये तो बोले, देखो, तुम्हारी खेती कैसी दिखती है! मैंने देखा कि सचमुच यौगिक खेती के इस प्लाट

में धान थोड़ा कम दिखाई दे रहा था, उनकी खेती में बहुत ज्यादा दिखाई दे रहा था। फिर भी 'जो होगा, अच्छा होगा' इस ज्ञान से और परमात्म निश्चय से मैंने सिर्फ इतना कहा कि जो ईश्वर की इच्छा। फसल 8 दिन बाद काटी गई, धान का वजन किया गया तो पाया कि उनकी खेती के एक स्क्वेयर मीटर में 500 ग्राम धान हुआ और यौगिक खेती के एक स्क्वेयर मीटर में 700 ग्राम धान हुआ। यह देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वो बोले कि हमने तो कई अच्छी रासायनिक खादें डाली थीं और इन्होंने कुछ नहीं डाला, जरूर तोलने में कुछ गड़बड़ हुई होगी इसलिए फिर से तोलकर देखो। फिर से तोला गया तो उतना ही वजन मिला। उनकी रासायनिक खेती में सारी फसल पर कीट लगी थी पर यौगिक खेती में कहीं भी कीट नहीं लगी थी। कई जगह पर उनकी फसल जमीन पर गिर गई थी पर यौगिक खेती का एक पौधा भी जमीन पर नहीं गिरा था। रासायनिक खाद वाला बहुत सारा धान खाली निकला, अन्दर दाना भरा ही नहीं इसलिए वज़न कम पाया गया लेकिन यौगिक खेती का एक-एक दाना भरपूर था इसलिए वज़न ज्यादा मिला।

सरकारी फार्म बना उदाहरण

इस तरह जब उनको पता चला कि यौगिक खेती में कम खर्चे में ज्यादा उपज मिलती है तो उन्होंने निर्णय लिया कि जब तक मैं यहाँ हूँ तब तक इस फार्म में कोई भी रासायनिक खाद व कीटनाशक दवाई नहीं डाली जायेगी। फिर इस क्षेत्रीय अधिकारी ने अपने सारे कर्मचारियों के लिये शाश्वत यौगिक खेती की ट्रेनिंग रखी और वहीं पर ट्रेनिंग सेन्टर शुरू किया। फिर उस फार्म पर यौगिक-जैविक पद्धति से कई तरह की सब्जियाँ, फल-फूल, गन्ना, नारियल के पौधे उगाए गये जिसका परिणाम बहुत अच्छा दिखाई दिया। पूरे गोवा में यह सरकारी फार्म यौगिक खेती का उदाहरण बन गया।

गोवा के मुख्य शहर पणजी में शिव जयंती के दिन बहुत बड़ी जगह में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के साथ ''शाश्वत यौगिक खेती'' का स्टॉल भी लगाया गया। स्टॉल के बाजू में ही उस सरकारी फार्म के सब्जियों के कुछ पौधे अच्छी तरह डिज़ाइन करके लगाये थे। प्रदर्शनी का उद्घाटन गोवा के राज्यपाल के हाथों हुआ। जब वे स्टॉल पर आये तो यौगिक खेती के बारे में विस्तार से सुना और साथ में यौगिक पौधे भी देखे, बड़े प्रभावित हुए और राजभवन के बगीचे के कर्मचारियों के लिये ट्रेनिंग शुरू कर दी और यहाँ के कुछ पौधे भी अपने बगीचे में लगवाये।

दुख का कारण व्यसन

किसानों को दु:खी-अशान्त करने का एक कारण है व्यसन। व्यसनों के कारण उनके परिवार दु:खदाई जीवन जी रहे हैं। मेरे ससुर जी इज्जतदार सफल किसान होते हुए भी मेरे पति शराब और तम्बाकू के भयंकर व्यसनाधीन थे। दिन-रात व्यसनों में डूबे रहने से वो खेती से तो दूर ही रहते थे पर अच्छी-खासी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। उनके गलत व्यवहार और अपशब्दों से पूरा परिवार परेशान था। मेरी हालत तो पिंजरे में फंसे पंछी की तरह थी। घर की इज्जत की वजह से ना मैं घर छोड़कर जा सकती और ना ही इस शराबी के अत्याचार को सहन कर पाती थी। समाजसेविका और उप-सरपंच होने के कारण एक दिन जब गोवा के मुख्यमंत्री और उनके साथियों के साथ हमारे घर पर ही विशेष सभा थी, तब मेरे शराबी पति अस्त-व्यस्त कपड़े और हाथ में शराब की बोतल लेकर अन्दर आये और नशे में उनके साथ गलत व्यवहार किया, तब मैं शर्म से पानी-पानी हो गई। परिवार की कोई भी जिम्मेवारी उठाने के लिये वो नाकामयाब थे। तंग होकर दो बार आत्महत्या का भी प्रयास किया पर छोटे-छोटे तीन बच्चों की स्मृति से इरादा बदल दिया।

शराबी पर योग का प्रयोग

उनको व्यसनों से छुड़ाने के लिए हवन किया, तीर्थ-यात्रायें की, उपवास किये, मंत्र जाप किए, किसी माता के

अन्दर देवी आती है तो उनके पास भी ले गई, 300 सीढ़ियाँ चढ़कर एक देवी के मन्दिर में मुर्गे की बलि भी चढ़ाई पर फिर भी व्यसन नहीं छूटे। फिर 7 हजार रुपये भरकर कृपा फाउण्डेशन (शराब छुड़ाने वाली संस्था) में भी रखा लेकिन जिस दिन वे वहाँ से बाहर आये तो सबसे पहले सीधे दारू की दुकान में गये। इस परेशानी की हालत में भगवान ने मुझे ब्रह्माकुमारीज़ विद्यालय का रास्ता दिखाया। यहाँ सिखाये जाने वाले राजयोग के अभ्यास से स्वयं के विचारों का परिवर्तन हुआ। भय, चिंता से मुक्त हो गई। यौगिक खेती करने से अन्दरूनी शक्तियों का प्रयोग करना सीखा तो परमात्म शक्तियों के अनुभव होते गये तब मैंने अपने पति पर भी योग का प्रयोग करना शुरू किया। करीबन तीन महीने प्रयोग करने के बाद उनके संस्कार बदलने लगे और एक दिन जब मैंने सहज ही उनसे पूछा कि क्या आप राजयोग का सात दिन का कोर्स करेंगे? तो उन्होंने तुरंत हाँ कर दी। जिस दिन से कोर्स शुरू किया, उन्होंने शराब पीना बन्द कर दिया। धीरे-धीरे तम्बाकू भी छूट गयी। राजयोग से आत्म जागृति हुई, परमात्मा से सम्बन्ध जुट गया और 4 साल में उनका ऐसा परिवर्तन हुआ कि आज वो घर के, खेती के हर कार्य में सहयोग देते हैं। इतना ही नहीं, घरों के नज़दीक ही गीता पाठशाला में ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) भी पढ़कर सुनाते हैं। आज मेरा घर जैसे स्वर्ग बन गया है।

आज एक ओर जहाँ हजारों अन्नदाता किसान कर्ज, प्राकृतिक आपदायें, भय, चिंता, मानसिक तनाव की वजह से रोगी, व्यसनाधीन होते दिखाई दे रहे हैं, आत्महत्या जैसे मार्ग को अपना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर शाश्वत यौगिक खेती करने वाले हजारों किसान राजयोग के अभ्यास से सहनशक्ति, समाने की शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय शक्ति को बढ़ाकर, धैर्य, निर्भयता, अन्तर्मुखता जैसे गुणों को धारण कर व्यसनों से मुक्त, निश्चिंत और खुशहाल जीवन जी रहे हैं और समाज को भी शुद्ध, शक्तिशाली और पौष्टिक अन्न प्रदान करके दुआयें प्राप्त कर रहे हैं। आइये, हम भी खुशहाल जीवन की ओर कदम बढ़ाएँ ताकि सारी धरती गोकुल गांव बन जाये, स्वर्ग बन जाये। ❖

पहले-सा आलसी अब नहीं हूँ

ब्र.कु. गणेश, पारड़ा माताजी, डुंगरपुर (राजस्थान)

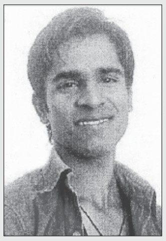

मैं पिछले चार सालों से राजयोग सीख रहा हूँ। इससे पहले मैं बहुत आलसी था। मेरे में एकाग्रता की कमी थी। सुबह 11 बजे तक सोये रहना, कुछ काम न करना, दोस्तों के साथ समय खराब करना, यही मेरी दिनचर्या थी। सन् 2011 में एक दिन आस्था चैनल पर शाम 7.10 बजे 'अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़' कार्यक्रम में शिवानी बहन का प्रवचन सुना। मन प्रसन्न हो गया और लगन लग गई कि मुझे राजयोग सीखना ही है। हमारे गाँव में कोई ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र नहीं है। सन् 2012 में मैं बी.एस.सी.करने राजकीय महाविद्यालय, बासवाड़ा (राजस्थान) आया। वहाँ हमारे कॉलेज के पीछे ही ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जब सेवाकेन्द्र पर गया तो ऐसा लगा जैसे मैं परमधाम में हूँ। निमित्त बहन ने सात दिन का राजयोग का कोर्स कराया। फिर रोज मुरली सुनने जाने लगा। इससे मुझमें जो बदलाव आया, उसे देखकर मेरे घर वाले बहुत ही खुश हुए। अब मैं पहले-सा आलसी नहीं रहा। रोज चार बजे उठ जाता हूँ और मन भी एकाग्र रहता है। ना कोई फालतू विचार आते हैं और ना ही कोई टेंशन। अतिनिद्रा की बीमारी भी ठीक हो गई है। पढ़ाई में भी मन लगने लगा है। अब मैं इसी कॉलेज से एम.एस.सी.कर रहा हूँ।

जब भी मन में नेगेटिव विचार आते हैं, मैं योग करने बैठ जाता हूँ और बस बाबा सारे काम संभाल लेते हैं। बाबा ने मुझे सांसारिक मोह से छुटकारा दिला दिया है। मुझे हमेशा खुश देखकर मेरे मौसेरे भाई जयेश ने खुशहाल जीवन का राज पूछा तो मैंने उसे राजयोग के बारे में बताया। उसके मन में भी राजयोग सीखने का विचार आया और सेवाकेन्द्र पर सारी क्लासेज अटेंड करके वो भी अपने जीवन में खुश है। बाबा, आपके बहुत शुक्रगुजार हैं हम। ❖

इच्छा छोड़, अच्छे बनें

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं, बच्चो, इच्छाएँ छोड़, अच्छे बनो। इच्छाओं का अर्थ है, आवश्यकताओं के पूरा होने के बाद भी मन में कुछ लेने और पाने की चाह बनी रहना। इस चाह का कोई अन्त नहीं है। धरती सहित इसकी सारी सम्पदा झोंक देने पर भी इस चाह को पूरा नहीं किया जा सकता। यह पूरी होती है तो अहंकार जगता है, पूरी नहीं होती है तो निराशा जगती है। आवश्यकता तो अपने लिए होती है पर इच्छा अपने लिए कम, दूसरों को दिखाने के लिए अधिक होती है। यह इच्छा – चीजों, साधनों, सुविधाओं आदि किसी भी रूप में प्रकट हो सकती है। हम इस संसार में आये हैं शरीर रूपी साधन को लेकर साधना करने परन्तु इच्छाओं की अधिकता हमें साधक की बजाय सेवक बना देती है। इच्छित चीजों के सामने हमारा अस्तित्व उनके सेवक और सम्भालकर्त्ता होने तक सिमट जाता है।

कौन मालिक, कौन सेवक?

यदि हमारे पास बहुत महंगी कार है तो लोग हमें नहीं, हमारी कार को देखने लगते हैं। वे कार को सहलाते हैं, उसके रूप, रंग, बनावट की महिमा करते हैं, उसकी कीमत पूछते हैं। कार कितनी भी महंगी हो, आखिर है तो हमारी सेवक अर्थात् यात्रा के लिए एक साधन परन्तु कैसी विडम्बना है कि लोग सेवक (कार) को देखते हैं, उसकी बातें करते हैं परन्तु उसके मालिक को न देखते हैं, न उसकी चर्चा करते हैं। इसी सेवक (कार) के कारण कोई तो हमसे ईर्ष्या भी कर बैठते हैं और कोई-कोई कार को खरीदने में लगी हमारी कमाई पर भी उंगली उठा देते हैं। सार यही है कि लोगों के मन-मस्तिष्क में हमारा सेवक छाया है, हम नहीं। इससे ऐसा लगने लगता है कि कार हमारी मालिक है, हम उसके मालिक नहीं क्योंकि नजरों में मालिक चढ़ता है, सेवक नहीं।

नौकर की बजाय खुद को सजाएँ

शरीर रूपी साधन भी हमें श्रेष्ठ कर्म करके पुण्य कमाने के लिए मिला है। आत्मा इसकी संचालक है। कई बार ऐसा होता है कि हमारे ही कर्मों के कारण शरीर और इसकी इन्द्रियाँ साधन की बजाय हमारे साध्य बन जाते हैं। हमने हाथ को सजाया। कोहनी तक मेहंदी के फूल लगाए, नेल पोलिश लगाई, हर अंगुली को जेवर से सजाया। देखने वाले हमारे हाथों को देख रहे हैं, मालिक आत्मा को नहीं। हाथों की सुंदरता की प्रशंसा हो रही है, मेरी (आत्मा की) नहीं। आश्चर्य है, हाथ तो मेरे नौकर हैं, जिनसे मुझ आत्मा को दिन भर में सैकड़ों प्रकार के काम निपटाने हैं पर इनको तो मैंने सजाकर बिठा दिया, अब मेरे काम कौन करे? काम के लिए मैं आत्मा दूसरों पर निर्भर हो जाऊँगी, पराधीन (पर-अधीन) हो जाऊँगी और कहा जाता है, पराधीन सपनेहु सुख नाही। यदि सुख चाहिए तो हम इस पराधीनता से बचें। अपने नौकर को, नौकर ही बनाकर रखें। उसकी बजाय स्वयं का गुणों से श्रृंगार करें ताकि लोगों की नजर मुझ आत्मा पर जाए और हम पराधीनता से भी बच जाएँ।

सजावट बन जाती है सजा

होंठों की सुन्दरता है मुसकान परन्तु आजकल यह स्वाभाविक सुन्दरता समाप्त होकर लाल रंग के रसायनों से होंठों को सजाया जा रहा है। यह सजावट रोगों को निमन्त्रण दे रही है। ये रसायन अति घातक होते हैं और इनका निर्माण भी हिंसक तरीके से होता है। कई प्राणियों को सताकर, तड़पाकर उनके शरीर से निकलने वाले स्रावों को मिलाकर इन प्रसाधनों का निर्माण होता है। कहा जाता है कि किसी को सताकर चीज बनाने वाला, प्रयोग करने वाला, सब उस कर्म में भागीदार होते हैं। होंठों की इस बनावटी सजावट के कारण जिह्वा जैसे ताले में बन्द हो जाती है और यदि बाहर

निकलती है तो इस केमिकल को अपने साथ लेकर अन्दर लौटती है। धीरे-धीरे यह लाली रूपी केमिकल शरीर के भीतर जमा होकर सैकड़ों प्रकार की बीमारियों का कारण बनता है। फिर हमें लेने के देने पड़ जाते हैं। सजावट ही सजा बन जाती है। तो क्यों ना हम हानिरहित सजावट अर्थात् मुसकान से अपने होंठों को सजाएँ और क्यों ना हम आत्मा को इतना सजाएँ कि लोग आत्मा के गुणों की चकाचौंध में हमारे होंठ रूपी नौकरों को देखना ही भूल जाएँ क्योंकि आखिर तो होंठ दूसरों को दिखाने के लिए ही सजाए जाते हैं, स्वयं की आँखें तो सीधे इन्हें कभी देख ही नहीं पातीं। देखती हैं तो मात्र दर्पण के सहयोग से।

भोगवाद से योगवाद की ओर

आज का भौतिक युग उपभोक्तावादी युग है, उपयोगितावादी नहीं। उपयोग और उपभोग में अन्तर है। उपयोग में योग शब्द है और उपभोग में भोग शब्द है। योग से आत्मा का पोषण होता है और भोग से आत्मा का शोषण होता है। हम अनेक प्रकार के तेल प्रयोग करते हैं पर इन्होंने हमारे बालों का इतना शोषण किया कि सिर के बाल गायब हो गए पर तेल तो बाजार में आज भी हैं। हमने अनेक प्रकार के सुगन्धित साबुन प्रयोग किए, फिर भी त्वचा ढीली होती गई लेकिन बाजार में साबुनों की भरमार आज भी है। हमने अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थों का आनन्द लिया पर हमारे दाँत चले गए, फिर भी खाद्य पदार्थ खत्म नहीं हुए। भर्तृहरि ने ठीक कहा था, 'भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता।' हम भोगों को नहीं भोगते, भोग हमें भोग लेते हैं। आत्मा का कल्याण भोगवाद से योगवाद की ओर जाने में है। योग अर्थात् चीजों और पदार्थों में आसक्त मन को वहाँ से हटाकर पिता परमात्मा से जोड़ना। इससे आत्मा को परमात्म शक्तियाँ, गुण और ज्ञान, वरदान रूप में मिलते हैं जो उसका पोषण करते हैं अर्थात् उसे सशक्त करते हैं।

चाहिए-चाहिए रूपी चर्मरोग

वर्तमान समय चीज़ों का अन्धाधुन्ध उत्पादन है। इसके लिए वनों की अवैध कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और अन्य अनेक प्रकार का प्राकृतिक प्रदूषण बढ़ रहा है। उत्पादन के पीछे लाभ की भावना है जो कब लोभ में बदल जाती है, पता ही नहीं चलता है। लोभ के प्रकम्पनों से भरी वस्तुएँ इन्हें खरीदने वालों, प्रयोग करने वालों के मन में भी इसी प्रकार के भावों को जन्म देती हैं। जैसा बीज वैसा फल के अनुसार आज चीजों का संग्रह, चीजों का लालच, चीज़ों का दिखावा, चीजों का अहंकार – ये मनोवृत्तियाँ आत्मा पर हावी होकर उसके तेज को मलिन कर रही हैं। चीजों की चाह में चिरस्थायी आत्मा उपेक्षित हो रही है। आवश्यकता है मन को पदार्थों से हटाकर परमात्मा की ओर मोड़ने की। इससे आवश्यकताएँ तो पूर्ण होती रहेंगी पर चाहिए-चाहिए रूपी चर्मरोग समाप्त हो जाएगा।

भावशून्य और भावपूर्ण

मानव में प्रेम, शान्ति, पवित्रता... आदि अनेक प्रकार की भावनाएँ भरी हैं। इनके आदान-प्रदान से उसे जीवन का आनन्द आता है परन्तु पदार्थ, चीजें, वैभव आदि तो जड़ हैं। उनमें ना भावनाएँ हैं और ना संवेदनाएँ। वे भावशून्य हैं और मानव भावपूर्ण है। दोनों की जाति अलग-अलग है। अतः इन जड़ पदार्थों के आदान-प्रदान से सच्ची खुशी, सच्चे प्रेम का अहसास नहीं हो पाता। पुराने जमाने में दो पैसे का कार्ड किसी मित्र-सम्बन्धी को लिखा जाता था, वह कई वर्षों तक उसके घर में तार से लटका रहता था। उस पर हाथ से लिखे गए प्रेम भरे शब्द बाद में जब-जब पढ़े जाते थे, हृदय को गुदगुदा देते थे। आधुनिक युग में मशीन निर्मित शुभभावना कार्ड, बधाई कार्ड भेजे जाते हैं जो श्रृंगारित उत्पाद तो हैं परन्तु मिठास रहित। हृदय को गुदगुदाने की शक्ति उनमें नहीं है इसलिए कई बार एक नजर भर देखकर और कई बार तो बिना नजर डाले ही कूड़ेदान के सुपर्द कर दिए जाते हैं। कोई भी जड़ उत्पाद, मानव का साथी, हितैषी, शुभचिन्तक नहीं हो सकता है क्योंकि वह भावशून्य है। हाँ, ऐसी चीजों का संग्रह और

लोभ धीरे-धीरे हमें भी भावशून्य कर देता है। आधुनिक युग में लोगों की मानवीय संवेदनाओं का कुंद हो जाना, उनके पदार्थ-प्रेम का ही कुपरिणाम है।

अमरता और क्षणभंगुरता

कहा जाता है, धन से पहले धनी को और माल से पहले मालिक को याद करो। वह तो एक परमात्मा ही है। 'सबै भूमि गोपाल की' इसका भी भावार्थ यह है कि यह जगत प्रभु का है। यदि इच्छा रखनी ही है तो मालिक को पाने की रखें, फिर सारा माल स्वत: मिल जाएगा। धनी प्रभु के हो जाने पर सब प्रकार का धन स्वत: पीछे-पीछे आएगा। जैसे अन्धेरे में अपना साया भी साथ छोड़ देता है इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान के प्रकाश के अभाव में स्वयं की सत्य पहचान भी छूट जाती है। जो अपनी अमरता को नहीं पहचानता वह पदार्थों की क्षणभंगुरता को कैसे पहचानेगा? अत: क्षणभंगुर पदार्थों की इच्छा छोड़ अपने अमर अस्तित्व को पहचानें जिससे इच्छाएँ अच्छा बनने की लगन के रूप में परिवर्तित हो जाएंगी।

सन्त कबीर अपने शिष्यों से कहा करते थे, रोज सवेरे शैतान आकर मुझसे प्रश्न करता है – आज तू क्या खाएगा? मैं उत्तर देता हूँ, मिट्टी। वह पूछता है, क्या पहनेगा? मैं जवाब देता हूँ, मुरदे का कपड़ा। वह फिर पूछता है, रहेगा कहाँ? मैं कहता हूँ, श्मशान में। मेरे ये उत्तर सुनकर शैतान मुझे अभागा बताकर चल देता है क्योंकि मैं उन सब चीजों के लिए अनिच्छा प्रकट करता हूँ जिनमें वह संसार के प्राणियों को फंसाकर मनुष्य से राक्षस बना देता है। इसलिए उसका मुझ पर वश नहीं चलता। ❖

बाबा ने बचाया हाथ

ब्रह्माकुमार दिनेश, कामठी (महाराष्ट्र)

जनवरी, 2015 में एक सत्गुरुवार को मेरी तरफ से बाबा को भोग लगाया गया था। छुट्टी न होने के कारण उस दिन भी मुझे नौकरी पर जाना पड़ा। वहाँ वरिष्ठ अधिकारी के द्वारा बताए हुए कार्य को करते हुए मेरा हाथ दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मैं दर्द से तड़पने लगा और बाबा का आह्वान कर कहा, 'बाबा, आप ही मुझे इस तकलीफ से बचा सकते हो।' दस मिनिट बाद मेरे फँसे हुए हाथ को बाहर निकाला गया और नजदीक के हॉस्पिटल में ले जाया गया। डॉक्टरों ने बताया कि हाथ की तीन उंगलियों की हड्डियाँ टूट चुकी हैं अत: उपचार के लिए ऑपरेशन थिएटर ले जाया गया। सायंकाल 6 से रात 10 बजे तक ऑपरेशन चलता रहा। जब रात 11 बजे होश आया तब हाथ में असह्य दर्द था। दूसरे दिन प्रात: सेवाकेन्द्र के भाई द्वारा सत्गुरुवार का (बाबा का) भोग भेजा गया जिसे मैंने इस संकल्प के साथ स्वीकार किया कि बाबा मेरे हाथ की सारी तकलीफों को दूर कर रहे हैं, हाथ का दर्द धीरे-धीरे कम होता जा रहा है और बाबा की शक्तिरूपी किरणें मेरे हाथ पर आ रही हैं। इस मंथन से कुछ ही दिनों में मेरा हाथ काफी अच्छा हो गया।

जब टाँके निकालने के लिए मुझे हॉस्पिटल बुलाया गया तब डॉक्टर्स कहने लगे कि आपके हाथ की उंगलियों को बचाना नामुमकिन था किंतु अब आपकी उंगलियाँ पहले से बेहतर हैं, यह कोई चमत्कार से कम नहीं है। मैंने उनको बताया, दवा के साथ-साथ बाबा की दुआ का भी असर हुआ है। डॉक्टर्स ने भी इस बात को माना। आज मैं हाथ द्वारा सभी कार्य आसानी से कर सकता हूँ।

अपने अनुभव से मैं यही कहूँगा कि किसी कार्मिक हिसाब-किताब के कारण इस प्रकार की शारीरिक परीक्षाएँ आ जाती हैं परन्तु यदि बाबा को दिल में बसाया है तो वह हमें कठिन-से-कठिन समय से भी बाहर निकाल लेते हैं। वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह!

जीवन के रंग, भगवान बेटे के संग

ब्रह्माकुमारी ऊषा, पीतमपुरा (दिल्ली)

भगवान बेटा बनकर ऐसे साथ निभायेगा, ये संकल्प तो क्या, स्वप्न में भी नहीं था। बिना हाथों के बनाये देवता, ये है उसकी कमाल, यह हर पल अनुभव किया है। मुझे ज्ञान में 19 वर्ष हो गये। कैसे बीत गये प्रभु के संग ये दिन, पता ही नहीं चला। कुछ अनुभव आपके साथ बाँट रही हूँ –

आँखों से अश्रुधारा बह निकली

बेटी की शादी थी 10 दिसम्बर, 2013 में। बेटे वालों की प्रार्थना थी कि हम वृन्दावन जाकर आध्यात्मिक रीति से शादी करेंगे। कोई भी लौकिक या अलौकिक कर्म होता है तो मैं बाबा को भोग जरूर लगवाती हूँ और उसको लिखित रूप से या जबानी जरूर बताती हूँ। घर के सदस्य हैं, बड़े बेटे हैं, उनका हिस्सा, उनकी ड्रेस के पैसे सेवाकेन्द्र पर जाते हैं। जब वृन्दावन के लिए निकल रहे थे, मैं घर में बने बाबा के कमरे में बैठ बाबा को साथ लेकर चली, 'बेटा, तेरी बहन की शादी है, तेरी ही जिम्मेवारी है, लौकिक में भाई ही संभालता है, आपकी ही बहन है', कहकर मैं बिल्कुल हल्की हो चली। सब ठीक हो रहा था। बारात पंडाल के बाहर खड़ी थी, अन्दर शोर मचा हुआ था। वहाँ गई तो देखा, युगल बहुत घबराये हुए थे जैसे कि अभी गिरेंगे चक्कर खाकर। मैंने पूछा, क्या हुआ? बोले ही नहीं। फिर पूछा, क्या हुआ? कहते हैं, पैसे वाला बैग गुम हो गया, कहीं नहीं मिल रहा, क्या करूँ? कहाँ से पैसे लाऊँ? उसमें 5 लाख रुपये थे, दिल्ली में होता तो एक मिनिट में ले आता। मैंने सब सुनते हुए, बाबा को जोर से अंदर ही अंदर बोला, तू क्या कर रहा है, तू किसलिये आया है, तेरे माँ-बाप रो रहे हैं। मैं बाबा से रो-रो कर बात कर ही रही थी कि युगल का फोन बजा, किसी का बैग होटल की रिसेप्शन पर रखा है, लेकर जाओ। मेरी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। अभी लिखते हुए भी मेरी आँखों में पानी है। आप उस समय की स्थिति का जायजा लगा सकते हो, क्या हालत थी हमारी, जहाँ कोई काम में नहीं आ सकता वहाँ आलमाइटी सर्वशक्तिवान हजार भुजाओं वाला मेरा बेटा भगवान काम आया। मुझे बड़ा नाज है अपने भाग्य पर। स्नेह-प्यार की तुझसे बाबा बांधी है जीवन डोर।

बाबा ने जैसे वीडियो दिखा दिया

हमारा संयुक्त परिवार है, भाइयों का व्यापार भी इकट्ठा ही है। ससुर जी ने शरीर छोड़ा, वे कोई सम्पत्ति छोड़कर गये थे, जो अब करोड़ों की है। उसको बेचना था। उसके लिए कागज चाहिएँ थे, मिल नहीं रहे थे। दोनों भाइयों में राम-लखन जितना प्यार है। वो कहे तेरे पास, वो कहे तेरे पास। मनों में दरार आनी सम्भव थी। घर के कोने-कोने को बार-बार देख लिया, कहीं नहीं मिली। आखिर में इन्सान को भगवान की याद आती है। युगल ने कहा, बाबा से पूछ, कहाँ रखी है? मैं अपने ही कमरे में बाबा के चित्र के सामने बैठी, बेटा तू बता दे, कहाँ रखी है, दो परिवार टूट जायेंगे। बाबा ने जैसे वीडियो दिखा दिया, बच्ची, सेकण्ड फ्लोर के स्टोर में गोदरेज की आलमारी के लॉकर में रखी है। मैं भागी-भागी ऊपर गई, अलमारी खोली तो फाइल सामने रखी थी। युगल को दिखाया तो हैरान, बोले, यही तो है, बाबा को भोग लगवाना। दिल से निकला, मेरे पिछले जन्मों के अच्छे कर्म हैं, जो बाबा तेरा प्यार मिला।

सच्चे दिल पर साहेब राजी

श्राद्धों के दिन चल रहे थे, ससुरजी का श्राद्ध था। प्यार से हलवा, पूरी, सब्जी बनाई, बाबा को भोग लगाने बैठी, 'मनुष्य सृष्टि के बीजरूप बाबा, हमारे पूर्वज बाबू जी को भोग स्वीकार कराओ, उन्हें बुलाओ।' क्या देखती हूँ, बाबा कह रहे हैं, 'बच्ची, बच्चा तो सेब खाता था, तुम सेब लाई नहीं।' मैं बुद्धियोग से नीचे उतरी, बाबा की प्लेट में सेब रखा। मैंने कहा, 'बाबा, सॉरी, मुझे मालूम था, बाबूजी

नाश्ते से पहले नियमपूर्वक सेब खाते थे, मैं रखना भूल गई।' बाबा ने सूक्ष्म रूप से उस आत्मा को बुलाया, खिलाया और वो मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देकर गई। मेरी आँखें भर आईं। सच्चे दिल पर साहेब राजी।

खरोंच भी नहीं आई

सुबह-सुबह सबके टिफिन पैक करने होते हैं, रसोई में बाबा की याद में रोटी बना रही थी। कढ़ाई में दाल, सब्जी, परात में आटा, दूध आदि स्लैब पर रखे हुए थे। ऊपर से अलमारी का मोटा शीशा गिरा, उसके हजारों टुकड़े हो गये और सबमें मिक्स हो गये लेकिन मुझे कहीं खरोंच भी नहीं आई। मैं एकदम अशरीरी हो गई। ऊपर से बच्चे भागे, युगल आए, क्या हुआ? क्या हुआ? जिसके सिर पर तू है साईं, वो दुख कैसे पाये?

बेटा, तुम संभाल लो, मैं मुरली सुना रही हूँ

शाम के समय सेवाकेन्द्र पर मुरली सुना रही थी, फोन बजा, मम्मी घर का ताला नहीं खुल रहा है, किसी चाबी वाले को बुलाकर जल्दी खुलवाओ। मैं मुरली छोड़कर कैसे आऊँ? मैंने कहा, बेटा, तुम संभाल लो, मैं मुरली सुना रही हूँ। इतने में फिर घण्टी बजी, मम्मी, आप मत आना, ताला खुल गया। क्या कहूँ उसके बारे में। मेरा बेटा (भगवान) अपनी माँ को इतना भी कष्ट नहीं होने देता। एक बार दीदी के साथ प्रोग्राम में गये। दीदी ने कहा, आप ऑटो से चले जाओ, हमें देर हो जायेगी। मैं बाहर निकली तो एक ब्रह्माकुमार भाई ने कहा, बहन जी, हमारे होते आप ऑटो में जाओगे? मैं वहीं जा रहा हूँ, आपको छोड़ देंगे। हर पल, हर सेकण्ड वो अपने होने का अहसास कराता है।

कैसे भगवान हमसे बातें करते हैं !

मेरी सासू माँ को बड़ी बीमारी ने पकड़ा। मुझे पता चला तो घबराहट होने लगी। मैं बाबा के कमरे में बैठी, बाबा, मुझे बड़ी घबराहट हो रही है। बाबा जैसे कह रहे हैं, बच्ची, ड्रामा कैसे भूल गई। मम्मा मेरी राइट हैण्ड यज्ञ माता थी, मैं तो नहीं घबराया, तुम तो शिव की माँ हो, तुम कैसे घबरा सकती हो? उसके बाद मैं एकदम हल्की हो गई। एक रात को सासू माँ को बड़ी जोर से खाँसी आ रही थी। युगल ने मुझे जगाया, कहा, जाकर देख और माँ को कोई दवाई देकर आ। एक सेकण्ड में मैंने बाबा को कहा, बेटा, पोता ही दादी की देखभाल करता है, सारी दवाइयाँ उनके पास हैं, मैं क्या दूँ? बाबा जैसे कह रहे हों, माँ, गर्म पानी करके नमक डालकर दे दो। मैंने ऐसे ही किया। माँ गहरी नींद में सो गई। युगल सुबह पूछते हैं, कौन-सी दवाई दी थी? कैसे भगवान हमसे बातें करते हैं! कमाल है उनकी!

आप मेरे से दूर नहीं जा सकते

हमारे सेवाकेन्द्र पर हॉल छोटा पड़ रहा था, दीदी सेवाकेन्द्र के लिए बड़ा हॉल देख रही थी। मैंने बाबा को बोला, बेटा देख, आपकी माँ बूढ़ी हो जायेगी तो दोनों समय कैसे सेवाकेन्द्र आयेगी? आप मेरे से दूर नहीं जा सकते। अन्त में हमारे घर के साथ में सेवाकेन्द्र आ गया। एक-एक भाई-बहन ने कहा, ऊषा माता ने अपने बेटे को अपने घर के पास बुला लिया। छोटी दीवाली पर चक्रधारी दीदी सेवाकेन्द्र पर दीवाली मनाने आती हैं तो हर साल घर में भी चरण डालकर जाती हैं और सुख-शान्ति की कामना से दीपक जलाती हैं। अब की बार भी दीदी जब आई तो सारा परिवार खड़ा था। दीदी ने कहा, देखा, भगवान की माँ की ताकत, सेवाकेन्द्र को घर के पास ले आई। मैंने दीदी से कहा, ये भगवान की ताकत है, मेरी नहीं, वो माँ के बिना कैसे रहता? मुझे लगता है, यशोदा ने कृष्ण को ओखली से बांधा, ये मेरा ही यादगार भक्ति में बना है, जो स्नेह-प्यार की डोर में हजार भुजाओं वाले को बांध लिया।

भगवान, आप पुत्र रूप में सबको मिलें, जो सबको तार दें। अनुभव इतने हैं उसके साथ के कि एक भागवत तैयार हो सकती है। शुक्रिया, शुक्रिया बाबा शुक्रिया। ये अनुभव नहीं, ये मेरे दिल के उद्‌गार हैं।

कोई और हमें अब क्या देगा,
इस दर से जो मैंने पाया है,
जिसको तरसे जन्नत सारी,
मेरे सिर पर वो साया है।

संविधान – 2

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

संविधान (Constitution) हरेक संस्था के लिए आवश्यक है क्योंकि उसके आधार पर ही किसी भी देश, संस्था आदि का संचालन किया जाता है। संस्था का कारोबार किस प्रकार चलाना है, उसके लिए क्या करना है, कैसे करना है आदि सारी बातें संविधान में निर्धारित की जाती हैं। इसलिए संविधान को पवित्र मानते हैं।

अमेरिका का संविधान सबसे अधिक पुराना है। अमेरिका का संविधान इतना अच्छा है कि उसमे केवल 7 सूत्रों में ही बताया गया है कि सारे अमेरिका का कारोबार कैसे चलेगा। अमेरिका का संविधान 5-9-1774 में स्थापित हुआ। तत्पश्चात् 1 मार्च, 1781 के बाद उसमें थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन करना पड़ा वह भी बहुत जरूरी हुआ तब। इसलिए अमेरिकन अपने संविधान की बहुत महिमा करते हैं और उसके पीछे अपना तन-मन-धन लगाते हैं।

आज की दुनिया में सभी जानते हैं कि अमेरिका का अफगानिस्तान, वियतनाम आदि देशों से संबंध बिगड़ा हुआ है। परंतु साथ-साथ आर्थिक समृद्धि बहुत होने के कारण जैसे पहले के जमाने में जमींदार, लोगों पर दबाव डालकर काम कराते थे ऐसे ही अमेरिकी सरकार भी सभी देशों पर दबाव डालकर कार्य कराती है।

अमेरिका में 50 राज्य हैं जिसमें सबसे अधिक धनी राज्य कैलिफोर्निया है। वहां की जमीन उपजाऊ भी बहुत है, साथ-साथ वहां पर बहुत अधिक खनिज पदार्थो की खानियाँ हैं।

अमेरिका का संविधान सर्वश्रेष्ठ है और इसलिए कोई भी उससे नाराज नहीं है। अमेरिका में पहले राष्ट्राध्यक्ष 1,2 या 3 बार चुनाव लड़ सकते थे। परंतु रूजवेल्ट जब तीसरी बार राष्ट्राध्यक्ष के रूप में चुनकर आये तब जनता उनसे थक गई थी और उसके बाद उनकी मृत्यु हो गई। जब अब्राहम लिंकन राष्ट्रपति थे तो उनकी हत्या की गई क्योंकि वह श्वेत-अश्वेत के बीच में जो भेदभाव था उसे निकालना चाहते थे।

अमेरिकी संविधान की यह एक विशेषता है कि वहां पर अमेरिका के उच्चतम न्यायालय के सर न्यायाधीश (Chief Justice of Supreme Court of America) को सेवानिवृत्त (Retire) नहीं होना पड़ता है। वह सर न्यायाधीश जब खुद समझे कि मैं अब काम नहीं कर सकता हूँ तो वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे देते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका के तत्कालीन सर न्यायाधीश Warren Hastings ने 94 वर्ष की आयु में अपना Retirement घोषित किया था। इस प्रकार अमेरिका की भी खट्टी-मीठी बातें हैं।

अमेरिका के संविधान के बारे में लिखना पड़ेगा कि वह सचमुच एक पवित्र ग्रंथ है। वहां पर उसका कोई भी अनुचित उपयोग नहीं करते हैं परंतु भारत में कई बार ऐसा होता है।

फ्रांस का संविधान 4 अक्टूबर, 1958 में अपनाया गया। फ्रांस में पहले राजाशाही थी परंतु जब राज्यक्रांति हुई तो वहां के राजा-रानी वहां से भाग रहे थे। उतने में रानी ने कहा कि उसकी वैनिटी बैग रह गई है और वे जब उसे लेने गये तब वो पकड़े गये और मारे गये। ऐसा ही किस्सा हमें रामायण में दिखाई देता है। जैसे रामायण में सीता को सोने का हिरण चाहिए था इसलिए श्रीराम और लक्ष्मण दोनों गये और उसका फायदा उठाकर रावण ने सीता का हरण कर लिया। यह प्रसंग रामायण के साथ फ्रांस की राज्यक्रांति की तुलना करने को मजबूर करता है। फ्रांस में राजा के पूरे वंश को समाप्त कर दिया गया ताकि भविष्य में प्रजा कभी भी राजाई की ओर आकर्षित ना हो क्योंकि राजाशाही होगी

तो लोकतंत्र खत्म होगा। फ्रांस का संविधान भी बार-बार बदली हुआ है।

फ्रांस के लोगों का जीवन बहुत प्रभावशाली है इसलिए विश्व भर के काफी लोग वहाँ घूमने जाते हैं। जैसे भारत में ताजमहल है वैसे फ्रांस में एफिल टावर देखने जाते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन में भी लोकतंत्र की स्थापना हुई थी। वॉल पॉल ने राजा को पदभ्रष्ट किया और स्वयं राजा बन गया परंतु राज्य चलाने का अनुभव चाहिए और वॉल पॉल तथा उसके परिवार को राज्य कारोबार चलाने का अनुभव नहीं था परिणामस्वरूप ब्रिटेन में पुन: राजाशाही की स्थापना हुई थी। इंग्लैण्ड में सभी चाहते थे कि उनका संविधान लिखित रूप में हो परंतु किसी ने स्वीकार नहीं किया अत: उनका संविधान अलिखित रहा। इंग्लैण्ड में House of Lords, House of Commons तथा Supreme Court द्वारा पारित किये गये निर्णय ही फाइनल किये जाते हैं और उसी को कानून के रूप में मान्यता मिलती है।

इंग्लैण्ड के बारे में कहा जाता है कि वहां का लोकतंत्र बहुत मजबूत है। वहां एक पार्टी को Her Majesty's Government और दूसरी पार्टी को Her Majesty's Opposition कहा जाता है। वहां पर संसद में जो बहस चलती है वह भी बहुत सभ्यता एवं शांति से चलती है। इस देश की प्रजा में काफी अच्छी बातें हैं और इसलिए इतना छोटा देश होते हुए भी आधी दुनिया के ऊपर उन्होंने राज्य प्रस्थापित किया। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कह रहा हूँ कि राज्य का कारोबार किस प्रकार चलेगा, यह राज्य चलाने वाले शासक पर आधारित है। उदाहरण के लिए, भारत में मराठा साम्राज्य शिवाजी महाराज ने स्थापन किया और उनके बाद वह सत्ता उनके पुत्रों के हाथ में आई परंतु वे उसे ठीक रीति से नहीं संभाल सके और परिणामस्वरूप यह सत्ता पेशवाओं के हाथ में गई। पेशवाओं ने हर जगह सूबेदार रखे जैसे इन्दौर में होल्कर, ग्वालियर में सिंधिया, बड़ौदा में गायकवाड आदि को स्थायी रूप से रखा अत: समयांतर में वे सभी अपनी-अपनी जगह के राजा बन गये और कारोबार में कुशलता नहीं रही। जबकि इंग्लैण्ड से भारत या कनाडा कितना दूर है तो भी उन्होंने हर जगह वायसराय को नियुक्त किया और उसका कार्यकाल केवल 5 वर्ष रखा परिणामस्वरूप वे सभी इंग्लैण्ड की रानी या राजा के अधीन ही कार्य करते रहे और कहीं भी उनकी जड़ें मजबूत नहीं हो पायी।

मैं जब स्कूल में पढ़ता था तब हमें इतिहास में इंग्लैण्ड के Stuart & Hanover को अवश्य पढ़ना पड़ता था और उस पर हमें 100 अंकों का एक पेपर रहता था। सन् 1947 में भारत स्वतंत्र होने के बाद भी 1959 तक यही इतिहास पढ़ना जरूरी था अर्थात् गुलामी की प्रथा जल्दी नहीं जाती है। वहीं तुर्की के साथ ग्रीस के 300 वर्ष तक अनेक छोटे-बड़े युद्ध होते रहे। ग्रीस जब आजाद हुआ तो ग्रीस ने स्वतंत्र होने के तीन दिन बाद ही तुर्की का इतिहास पढ़ाना बंद कर दिया। इसे ही राष्ट्र प्रेम कहा जाता है। भारत में जब अंग्रेजों का राज्य था तब भारत का अंतिम बजट शाम 5.30 बजे पेश किया जाता था, कारण कि इंग्लैण्ड की संसद का कारोबार दिन में 12 बजे शुरू होता था और इंग्लैण्ड तथा भारत के समय में 5.30 घंटे का फर्क है। भारत आजाद हुआ फिर भी सन् 2000 तक भारत सरकार इंग्लैण्ड की प्रणाली के अनुसार ही शाम 5.30 बजे ही बजट पेश करते थे। फिर लोगों ने घमासान किया तो समय में बदलाव किया गया। इंग्लैण्ड के अलिखित संविधान की कॉपी भारत के संविधान में दिखाई देती है क्योंकि उस समय जिन लोगों ने भारत का संविधान बनाया वे सब उस समय इंग्लैण्ड से ही बैरिस्टर बनकर आये थे और इसलिए उनके विचारों पर इंग्लैण्ड का प्रभाव दिखाई दिया। भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं संसद की इंग्लैण्ड के साथ जब तुलना करके देखते हैं तो निम्नलिखित बातों में समानता

दिखाई देती है –

इंग्लैण्ड में	**भारत में**
राजा या रानी	राष्ट्रपति
House of Lords & House of Commons	लोकसभा व राज्यसभा एवं राज्यों में विधानसभा व विधान परिषद्
इंग्लैण्ड के कोर्ट में समर वैकेशन	भारत में भी कोर्ट में समर वैकेशन

कोई भारतवर्ष का संविधान पढ़े तो उनको लगेगा कि यह इंग्लैण्ड के संविधान की कॉपी है परंतु जैसे क्रिकेट में दूर से देखकर लगता है कि एक ही बैट है परंतु नजदीक जाने पर समझ में आता है कि अलग-अलग बैट हैं ऐसे ही इंग्लैण्ड के संविधान और भारत के संविधान के बारे में है।

इस तरह से हमने देश-विदेश के संविधान के बारे में विचार किया। अगले लेख में भी अन्य देशों के संविधान के बारे में विचार करेंगे। उम्मीद है कि हमने जो इस तरह संविधान के बारे में तुलना लिखी है, वह आप पाठकों को पसंद आयेगी।

दुआएँ

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी.(गुड़गाँव)

दुआओं से खिलती उम्मीदों की कलियाँ,
दुआओं से खुलती नित्य नई गलियाँ।
दुआओं में एक प्यारा-प्यारा सफर है,
दुआओं से मिलती सदा श्रेष्ठ घड़ियाँ।।

दुआएँ इबादत से बढ़कर हैं, दुआएँ मुस्कुराहट हैं।
दुआएँ दिल से निकलें जब, ये देती सच्ची राहत हैं।।
दुआओं में जादू-सा असर, खुशियों का जिसमें बसर।
दुआओं से मिलती जिन्दगी, रहती नहीं कोई कसर।।

दुआएँ जिन्दगानी हैं, ये साँसों की रवानी हैं।
दुआओं में गूँजें सफलता के स्वर, खुदा की मेहरबानी हैं।।
दुआएँ हैं एक आशियाना, ये खूबसूरत दिलों का तराना।
खुशबू महकती सदा साँसों में इनकी, दुआओं से जुड़ता रिश्ता पुराना।।

दुआएँ सहज दूरियों को मिटाती, सदा श्रेष्ठ भावों को मन में जगाती।
दुआएँ सदा ही वहाँ काम आती, दवाएँ जहाँ कुछ कर न पाती।।
दुआएँ सलामत, दुआएँ हिफाजत, दुआओं से चलता ये संसार सारा।
सदा ही दुआ लें और सबको दुआ दें, दुआओं में ही है भला बस हमारा।।

ज्ञानामृत ने बदली ज़िन्दगी

ब्र.कु. पवन, चांदूर रेलवे (महाराष्ट्र)

आज से तीन वर्ष पहले मैं मानसिक रोग का इलाज करवा रहा था। एक के बाद दूसरे, फिर तीसरे डॉक्टर के पास गया। तीसरे डॉक्टर ने मुझे परामर्श दिया कि आप अपनी जीवनशैली बदलो, साथ ही ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ने के लिए भी कहा व खुद के पास की ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के लिए दी। बाद में पता चला कि डॉक्टर भी इसी संस्था से जुड़े हुए हैं।

ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के बाद मेरे अंधेरे जीवन में उजाला फैल गया। पहले मैं आत्मा विकारों से, अहंकार से, दुखों से घिरी हुई थी, मन में व्यर्थ विचार चलते थे। पत्रिका पढ़ने के बाद समझ में आया कि बीती को भूल जाओ और क्षमा कर दो। नकारात्मक को सकारात्मक में बदलो और मैंने ऐसा ही किया।

आज मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ और ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र का नियमित विद्यार्थी हूँ। बाबा से मिलन मनाने के लिए मधुबन भी जाकर आया हूँ। ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के बाद मेरा जीवन ही बदल गया। धन्य-धन्य है यह ज्ञानामृत पत्रिका!

चाँद को गरूर है कि उसमें नूर है,
हमें भी गरूर है कि हम बाबा के
कोहिनूर हैं।।

चेहरे पर नूर और नैनों में बाबा बैठ गया

ब्रह्माकुमार दत्तू, मालेगाँव (नाशिक), महाराष्ट्र

मेरा लौकिक जन्म साधारण परिवार में हुआ। माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति के थे। सुबह-शाम पूजा-पाठ करना, उपवास करना, अपने इष्ट देवता को प्रेम से याद करना, ऐसी उनकी दिनचर्या थी। उनको देख बचपन में मैं भी मंदिर जाता था, आरती करता था तथा पढ़ते समय श्रीकृष्ण को याद करता था। मेरी भक्ति भावना देखकर माता-पिता बेहद खुश थे। उनको लगता था, अपना एकलौता बेटा बड़ा होकर धार्मिक क्षेत्र में नाम कमायेगा।

चढ़ गया कुसंग का रंग

परन्तु जैसे-जैसे मैं बड़ा होने लगा, बुराइयों की तरफ आकर्षित होने लगा। बिगड़े हुए दोस्तों के साथ के कारण कुसंग का रंग मुझ पर चढ़ गया, 15 साल की छोटी आयु में ही पूरा बिगड़ गया। तंबाकू, पान आदि एक साल तक चोरी-छिपे खाता रहा लेकिन झूठ कभी ना कभी सामने आता ही है। जैसे-जैसे माता-पिता को इन बातों की जानकारी होने लगी, वे बहुत चिन्तित हो उठे। इसी बीच मैंने गाड़ी चलानी सीखी। दिनभर गाड़ी चलाता, सुबह-शाम व्यसन की मस्ती में डूबा रहता। घर का बना हुआ खाना अच्छा नहीं लगता इसलिए होटल पर खाता। कमाई के पैसे घर में न देकर मौज-मस्ती में खर्च करता। माता-पिता ने बड़े प्यार से समझाने का प्रयत्न किया लेकिन जैसे उल्टे घड़े पर पानी। मैं उनकी एक नहीं मानता था। मेरी आदत बहुत पक्की हो गई थी, खुद को बहुत बड़ा समझने लगा था।

कोई देखे तो रोगी समझे

मेरी वजह से सारा परिवार परेशान रहने लगा। वे भगवान से प्रार्थना करते और अपनी तकदीर को कोसते कि हे भगवान, एक बेटा दिया, वह भी कुल को कलंकित करने वाला। वे सोचते, इसकी शादी भी नहीं होगी, शराब इसे पूरा निगल जायेगी, इसको कुछ हो, इससे पहले हे भगवान, हमें मौत दे देना। मेरे पिता को मेरे सुधरने की कोई आशा नहीं थी। दोपहर में भोजन के लिए तब जाता जब थोड़ा नशा कम हो जाता। मेरी माँ बहुत रोती, परेशान रहती और कहती, तू जन्म लेते ही मर जाता तो अच्छा होता, ये बुरे दिन देखने को नहीं मिलते। माँ-बाप को देख मुझे भी बहुत दुख होता और मन में ठान लेता, अभी नहीं पीऊँगा परन्तु शाम होते ही मेरे पाँव स्वत: शराबखाने की तरफ चल पड़ते। शराब बिगर मैं रह नहीं सकता था। बीस साल की आयु में ही कमजोर, शक्तिहीन दिखने लगा। कोई देखे तो मुझे रोगी समझे, ऐसी दशा हो गई।

अन्दर ही अन्दर मिली प्रेरणा

फिर एक दिन ऐसा आया जो मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई। हुआ यह कि मालेगांव के एक बड़े डॉक्टर उज्ज्वल भाई कापडणीस ने पूछा, आपको गाड़ी चलानी आती है? आप मेरे पास गाड़ी चलाने की सेवा करेंगे? मैंने हाँ जी कहा, तो उन्होंने कहा, कल सुबह आ जाना। अगली सुबह उन्होंने अपनी कार की चाबी मुझे सौंप दी। उनको और उनकी युगल डॉ.मनीषा बहन को किसी स्थान पर ईश्वरीय संदेश देने जाना था। उनकी अलौकिकता, दिव्यता और चेहरे की खुशी देख मैं मन ही मन कहने लगा, मुझे भी अब कुछ नया करना चाहिये, इनके जैसा सुन्दर जीवन मुझे भी बनाना चाहिये। उन्हें देख मुझे अंदर ही अंदर प्रेरणा मिल रही थी। पहले दिन ही उन्होंने मुझसे मेरा परिचय पूछा। मैंने उन्हें सब बातें खुले मन से बता दी। उन्होंने बड़े प्यार से, आत्म स्थिति में टिककर, शुभभावना से रहम का मरहम लगाया। फिर डॉक्टर होने के नाते व्यसनों से शरीर और मन पर होने वाले दुष्परिणामों के बारे

में बताया। साथ-साथ मनुष्य जीवन का महत्व बताते हुए आत्मा और परमात्मा का परिचय भी दिया।

नीरस जीवन में आ गया रस

मैं उनकी वाणी सुनते हुए अनुभव कर रहा था कि भगवान ने मेरे कल्याण के लिए मुझे इन फरिश्तों से मिला दिया है। पहले जब घर जाता था तो मेरी अमर्यादा की चलन, चिल्लाना, अशुद्ध खान-पान आदि देख माता-पिता को बहुत लज्जा आती थी और मेरे से बहुत डरते भी थे। कभी-कभी उन्हें लगता था कि घर छोड़ कर कहीं चले जायें लेकिन बूढ़े होने के कारण ऐसा नहीं कर सकते थे। मेरे कारण उन्हें बहुत आंतरिक पीड़ा भोगनी पड़ती थी। आज जब घर पहुँचा तो मन में डॉ.उज्ज्वल भाई की बताई बातों का ही चिंतन चल रहा था। उनके बोल कानों में गूंज रहे थे, मैं बहुत खुश था। मुझे देख मेरे माता-पिता को बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने उनके साथ बैठ भोजन किया, शराब भी नहीं पी थी। मैंने उन्हें आज का समाचार सुनाया तो वे बड़े ध्यान से सुनते रहे। मेरी माँ ने कहा, आज दत्तू को दत्तात्रेय जैसा गुरु मिला लगता है। भोजन के बाद मैं सो गया, बाहर कहीं नहीं गया। मन में ज्ञान की बातें चलती रही क्योंकि मुझे भी उनके जैसा जीवन बनाना है, यह ठान लिया था। दूसरे दिन डॉ.मनीषा बहन ने आत्मा और परमात्मा के बारे में और विस्तार से बताया। फिर मैंने सेवाकेन्द्र पर 7 दिन के ज्ञान का कोर्स किया और मुझे लगा, मेरे नीरस जीवन में रस आ गया है। अशांत भटकता जीवन स्थिर, शांत हो गया है।

स्वास्थ्य अच्छा हो गया

मेरे व्यसन, व्यर्थ खर्च, व्यर्थ समय – सब बंद हो गये और जीवन उत्तम बन गया। रोज सवेरे मुरली सुनने से, सेवा करने से, बाबा की याद की खुराक से स्वास्थ्य भी अच्छा हो गया। चेहरे पर नूर और नैनों में बाबा बैठ गया, यह सब मेरे बाबा की कमाल है। मेरे प्रियजन, माँ-बाप समझाते-समझाते थक गये, मैं सुनने-समझने से बाहर था परन्तु डॉ.उज्ज्वल भाई की एक दिन की समझानी से मेरा मन बदल गया। मुझे बदलने की शक्ति उनके बोल में नहीं बल्कि उनके जीवन की दिव्य धारणा में थी।

अपने इस मरजीवा जन्म से मैं बहुत खुश हूँ। मेरा पहला जीवन और अभी का जीवन देखकर सभी कहते हैं, इस पर तो जादू छा गया। ज्ञान में आए चार साल हो गये हैं। हर साल तीन-चार बार बाबा मिलन हो ही जाता है। कभी डॉ.उज्ज्वल भाई और डॉ.मनीषा बहन को बाबा मिलन के लिये उनकी कार चलाकर ले जाता हूँ। कभी बहन जी के साथ तो कभी दूसरे डॉक्टरों के साथ ड्राइवर बनकर आता हूँ।

अभी तो यही तमन्ना है कि मेरा सारा जीवन बाबा की याद में, सेवा में गुजरे। शुक्रिया बाबा, आपने मेरा जीवन बदल दिया। अब दिल यही गाता है, 'धन्य-धन्य हो गया, मैं प्रभु को भा गया, गा रही है जिन्दगी, काम उनके आ गया।'

मेरी कलम से ... (मधुकर लेले, पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक, दूरदर्शन, दिल्ली)

ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मलेन में भाग लेने के लिए आबू रोड स्थित शान्तिवन में आने का अवसर मिला। यह मेरे लिए सौभाग्य का संकेत है, यहाँ आकर ऐसी मेरी भावना बनी। मीडिया, आज के समाज के लिए रोज का साथी है, अच्छे-बुरे दोनों के साथ है। एक लाभकारी, वैश्विक उद्योग बन जाने के बाद अब उसे सामाजिक जिम्मेदारियों और उसके मूलभूत उद्देश्यों की याद दिलाना, एक बड़ी जरूरत बन चुकी है। यही कार्य ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्था ने इस सम्मेलन के जरिये किया है। भौतिकवाद से मानव के सुख-चैन को मानो ग्रहण लगता जा रहा है। आतंक, भ्रष्टाचार, कदाचार और अशान्ति उसी से फलित है। इसे रोक पाने में आधुनिक युग की समाज-नीति, राजनीति और पारंपरिक धर्म-संप्रदाय सभी विफल होते दिखते हैं। उबरने के लिए आशा की किरण, आध्यात्मिकता के विकास में ही नजर आती है। आज अध्यात्म और विज्ञान के बीच समन्वय और सहयोग की आवश्यकता है। ऐसी जीवन-शैली का प्रयोग और प्रसार, ब्रह्माकुमारीज की ओर से हो रहा है, उन्हें शत शत साधुवाद और प्रणाम। ❖

लघु नाटिका

भगवान कौन?

ब्रह्माकुमारी अनुभा, अलवर

नाटक मंचन : त्रिमूर्ति का बड़ा चित्र
चार पात्र : अनुदेव, तनुदेव, धनुदेव, नारद
देव सभा : दर्शक सभा

ब्रह्मा, विष्णु और शंकर अपने-अपने आसन पर विराजमान हैं। देवलोक में इस बात पर विवाद छिड़ा है कि तीनों में बड़ा कौन है? इस बहस में तीन देव अनुदेव, तनुदेव और धनुदेव सबसे आगे हैं। बहस का मुख्य बिन्दु है कि त्रिदेवों में जो ऊँचा हो, उन्हें ही भगवान माना जाये और उनकी ही स्तुति की जाये। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तीनों ही मौन साक्षी स्थिति में, निश्चिंत अचल बैठे हैं। बाकी बहस क्या चल रही है, आइए देखते है–

अनुदेव: *(ब्रह्मा जी का पक्ष रखते हुए)* इस देव सभा में उपस्थित सभी देवगणों को अनुदेव का अभिवादन! मैं सही बात कहता हूँ कि ब्रह्मा जी ही तीनों देवों में सबसे महान और ऊँचे हैं। ये आदिदेव हैं, सृष्टि के रचयिता हैं और सभी जानते हैं कि निर्माण का कार्य कितना श्रेष्ठ होता है। इसलिए आप सब मेरी बात से सहमत होंगे कि ब्रह्मा जी को ही भगवान का स्थान दिया जाये। ॐ ब्रह्मा देवाय नमः!

तनुदेव: नहीं! ब्रह्मा जी से ऊँचे विष्णु जी हैं। रचना करना तो आसान है लेकिन उसकी पालना करना, रक्षण करना कितना महान कार्य है। इसलिए मैं तनुदेव ठीक बात कहता हूँ कि विष्णु जी सबसे ऊँचे हैं। ॐ विष्णु देवाय नमः!

और सुनो! विष्णु जी का रूप कितना सुंदर, सजा हुआ और मनोहारी है। जी करता है, इन्हें देखते ही रहें, नयन तृप्त होते ही नहीं, इसलिए ये ही भगवान हैं।

अनुदेव: अरे! ब्रह्मा जी की सादगी की तो कोई मिसाल ही नहीं है। इनकी सादगी में जो त्याग और तपस्या की सुन्दर मूरत दिखाई देती है, वह विष्णु जी की छवि में कहाँ! इसलिए निर्विवाद रूप से ब्रह्मा जी ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

धनुदेव: अरे! आप दोनों अपनी बात ही रखते रहोगे या मुझे भी कुछ बोलने दोगे। रचना और पालना का कार्य तो ठीक है लेकिन रचना और पालना नये की होती है। जब तक पुराने का विनाश नहीं होता तो नये का मजा ही क्या है! शंकर जी विनाश के निमित्त हैं इसलिए ये महान देव ही ईश्वर कहलाने योग्य हैं। ॐ शंकर देवाय नमः!

और हाँ, इनके रूप का तो कहना ही क्या! कितना न्यारा और निराला है, जो योगियों को रिझाये और भोगियों को डराये।

अनुदेव व तनुदेव *(समवेत स्वर में)*: नहीं धनुदेव! हम तुम्हारी बात से सहमत नहीं।

धनुदेव: फिर तो आपसी सहमति बनाने की एक ही विधि है, चलो मतदान कर लेते हैं।

अनुदेव: हाँ यह ठीक है, धनुदेव! आप कृपया मतदान की प्रक्रिया सम्पन्न करायें।

धनुदेव *(सभा की ओर मुखातिब होकर)*: सभी देवों से मेरा विनम्र निवेदन है कि हाथ उठाकर अपना मत रखें। जो ब्रह्मा जी को सर्वोच्च मानते हैं, वे हाथ उठायें। हम गिनती कर रहे हैं... *(तीनों अंगुली के इशारे से मन ही मन गिनती करते हुए)*। अच्छा, अब जो विष्णु जी को ऊँचा मानते हैं, वे हाथ उठायें...। अच्छा, जो मेरी तरफ हैं, शंकर जी को ऊँचा मानते हैं, वे हाथ उठायें...। अरे! ये तो तीनों ही संख्याएँ बराबर हैं।

तनुदेव: हाँ, वाकई! तीनों संख्याएँ बराबर हैं माना तीनों के

पक्ष में समान वोट हैं। अब फैसला कैसे हो?

अनुदेव: अब तो बस किसी एक के वोट की ही जरूरत है और फैसला हो जाये।

धनुदेव: लेकिन हमने तो देवलोक के सब देवों से मतदान करा लिया, कोई भी बाकी नहीं है। फैसला अब कैसे होगा?

(नारद का प्रवेश) नारायण, नारायण

अनुदेव: अरे वाह! नारद जी आ गये। आइए देवर्षि, प्रणाम! बड़े अच्छे समय पधारे, धन्य भाग हमारे। आपकी यह तो प्रत्यक्ष विशेषता है कि जहाँ जरूरत हो वहाँ तुरंत पहुँच जाते हैं।

नारद: आज देवलोक में इतनी बड़ी सभा लगी हुई है, क्या कोई उत्सव है।

तनुदेव: उत्सव नहीं, एक उलझन है जिसे आप ही सुलझा सकते हैं।

नारद: कैसी उलझन तनुदेव?

तनुदेव: बात यह है मुनिराज कि आज देवलोक में इस बात पर मतदान हुआ है कि त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर में सर्वोच्च कौन है, किन्हें भगवान कहा जाये। विचित्र बात यह हुई कि तीनों के पक्ष में समान वोट पड़े। अब तो आपके मत से ही फैसला हो सकता है।

नारद: अच्छा, तो ऐसी बात है!

अनुदेव: देवर्षि, आप तो ब्रह्मा जी के पुत्र माने जाते हैं, आप जरूर अपने पिता के पक्ष में मतदान करेंगे। आप मेरी तरफ आइए।

नारद: वाह अनुदेव! आप पक्ष की बात कर रहे हैं या पक्षपात की। नारायण..नारायण।

तनुदेव: मुनिराज, आप तो विष्णु के परम भक्त हैं। सदा नारायण-नारायण शब्द आपके मुख पर रहता है। आपको तो अपने इष्टदेव के पक्ष में ही मत देना चाहिए। आप मेरी तरफ आइए।

नारद: अच्छा, तो आप मुझे भावुक कर मत डलवाना चाह रहे हैं! नारायण..नारायण।

धनुदेव: देखिए मुनिवर, अगर आपने शंकर जी के पक्ष में मत नहीं दिया तो ये तो कुपित हो जायेंगे और अपने तीसरे नेत्र से सब कुछ भस्म कर देंगे। हमारी और आपकी रक्षा इसी में है कि आप इनके पक्ष में मतदान करें।

नारद: अरे-रे, आप मुझे डरा रहे हैं! नारायण..नारायण। हे प्रभो, ये कलियुगी रीति-रिवाज यहाँ भी अपना प्रभाव दिखा रहे हैं।

(तीनों खींचातानी करते हुए) मुनिराज आप मेरी तरफ आइए....नहीं मेरी तरफ... नहीं मेरे पक्ष में...मेरी तरफ..मेरी तरफ..।

नारद: *(अपने को छुड़ाते हुए)* खामोश! बंद करो यह खींचातानी। यह मैं और मेरा, उफ! यह सब आपके अज्ञान का नतीजा है।

अब मेरी बात ध्यान से सुनो। आप भूल कर रहे हैं। प्रश्न यह नहीं है कि ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों में बड़ा कौन है। वास्तव में, यह जानना है कि तीनों से बड़ा कौन है।

(समवेत स्वर में) तीनों से बड़ा!

नारद: हाँ, तीनों से बड़ा, जो तीनों का रचयिता त्रिमूर्ति है; वही ब्रह्मा द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा पुरानी कलियुगी सृष्टि के विनाश का कार्य कराते हैं। वही करन-करावनहार है, उस परमपिता से आप अनभिज्ञ हैं।

अनुदेव: देवर्षि, आप कृपया हमें और भी स्पष्ट कर बतायें।

नारद: तो सुनो, तीनों ही देव एक-दूसरे से बहुत महान और ऊँचे हैं लेकिन भगवान तो वह है जो सबसे ऊँचा है। जो तीनों ही कार्य करने में समर्थ है। वह सर्व का रचयिता है, वही सर्व का पालनहार है, वही पाप कर्म की ओर प्रवृत्त करने वाली दुर्बुद्धि का, दुर्गुणों का और दुखों का नाश करता है।

तनुदेव: मुनिराज, कृपया हमें उनका संपूर्ण परिचय

दीजिए।

नारद: उनका नाम शिव है, वे निराकार ज्योतिस्वरूप हैं, सत्-चित्त-आनन्दरूप, परम पवित्र हैं। उनकी अनन्त महिमा है, वे पतित-पावन, सर्वशक्तिवान, दुख हर्ता-सुख कर्ता, सर्व के सद्गतिदाता हैं। वे ही सर्व के सच्चे मात-पिता, शिक्षक और सतगुरु हैं। वे सर्व के ईश्वर सर्वेश्वर हैं। वे ही कलिकाल में अवरित होकर अपना सत्य परिचय देते हैं और मनुष्यात्माओं को दुख से मुक्त कर पावन बनाकर अपने सत्यधाम ले जाते हैं। ऐसे प्राणेश्वर, प्यार के सागर, परमेश्वर को मैं बारम्बार नमन करता हूँ। ॐ शिव परमात्माय नम:!

धनुदेव: ॐ शिव परमात्माय नम:! मुनिवर! आपने हमारी अज्ञान की बंद आँखें खोल दी हैं। हम आपके बहुत आभारी हैं।

अनुदेव: ॐ शिव परमात्माय नम:! हमारे अन्तर् को ज्ञान-प्रकाश से आलोकित करने हेतु आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, देवर्षि!

तनुदेव: ॐ शिव परमात्माय नम:! हम धन्य-धन्य हुए मुनिराज। आओ, हम सब मिलकर शिव परमात्मा की स्तुति करें। *(गीत बजता है) (नृत्य)*

शिव तुम सर्वेश्वर, ओम परमेश्वर, महिमा तेरी हम
गायें..शिव तुम सर्वेश्वर.........
करते स्थापन, करते पालन, तुम ही विनाश कराते।
नरक समान जगत को तुम्ही, स्वर्ग समान बनाते।
जिसपे पड़ जाए दृष्टि आपकी, वो देवता बन जाये।
शिव तुम सर्वेश्वर.........*(समाप्त)*

श्रद्धांजलि

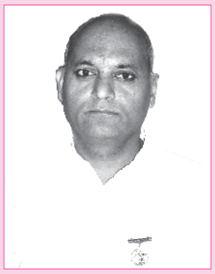

बापदादा के अति स्नेही, अथक सेवाधारी, मधुबन बेहद यज्ञ में समर्पित नरेन्द्र भाई का कुछ समय से किडनी खराब होने के कारण डायलसिस चल रहा था। आपने 10 अक्टूबर सायं 7.45 बजे, ग्लोबल हॉस्पिटल में अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ले ली। सन् 1972 में लौकिक माता-पिता के साथ अहमदाबाद (मणिनगर) सेवाकेन्द्र से आपने ज्ञान लिया। उसके बाद दबोई (गुजरात) में अलौकिक पालना हुई। आपकी लौकिक बहन उषा, 1988 से मोरबी में समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रही हैं। सन् 1992 से मधुबन महायज्ञ में रहकर आपने पाण्डव भवन तथा शान्तिवन के भोलेनाथ के भण्डारे में अथक सेवायें दीं। आपके शरीर की आयु 58 वर्ष थी। ऐसी स्नेही, सेवाधारी आत्मा को समस्त दैवी परिवार स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

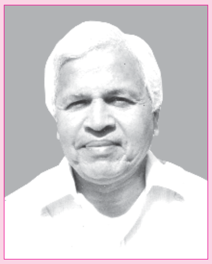

बापदादा के अति स्नेही, अथक सेवाधारी ब्र.कु.अनुरूप भाई जी को सन् 1977 में चण्डीगढ़ से ईश्वरीय ज्ञान मिला। उस समय आप चण्डीगढ़ में टाउन प्लैनर के रूप में सेवाएँ दे रहे थे। आप बहुत ही योगी, तपस्वी थे तथा ईश्वरीय सेवा की नई-नई विधियों पर प्रयोग कर उन्हें कार्यान्वित करने में माहिर थे। स्पार्क विंग के आप महाराष्ट्र जोन के संयोजक थे। आपने ईश्वरीय सेवार्थ अनेक देशों की यात्राएँ कीं जैसे मलेशिया, यू.के., फीजी, सूरीनाम, न्यूजीलैंड आदि-आदि। आपकी सुपुत्री ब्र.कु.अस्मिता बहन (यज्ञ के अनेक गीतों की गायिका) कोलकाता (बांगूर) में और पुत्र प्रसन्न ग्लोबल हॉस्पिटल में समर्पित हैं। आपकी युगल सरोजिनी बहन ने भी अनेक ईश्वरीय गीतों को स्वर दिया है। आपकी आयु 80 वर्ष थी। आपने 27-10-16 को अपनी पुरानी देह का त्याग कर बापदादा की गोद ले ली। ऐसी योगी, तपस्वी, स्नेही, सेवाधारी आत्मा को समस्त दैवी परिवार स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ज्ञान की गोली

ब्रह्माकुमारी नीता, बोरीवली वेस्ट (मुम्बई)

वर्तमान वैज्ञानिक युग में एक ओर मनुष्य के बुद्धिबल से प्राप्त साधनों से जीवन में कई सुविधाओं की उपलब्धियाँ हुई हैं लेकिन सच्चे सुख-शान्ति से आज का मानव वंचित होता जा रहा है। चारों ओर अगर दृष्टि दौड़ायें तो पाएंगे कि इंसान बाहरी स्वच्छता को महत्व दे रहा है लेकिन उसका अपना मन दूषित, कलुषित हो रहा है फलस्वरूप मानसिक बीमारियाँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

शरीर की बीमारियों को ठीक करने के लिए कई तरह के डॉक्टर्स निमित्त हैं, कई तरह के उपकरण बनाए गए हैं लेकिन ये साधन मन की बीमारी को ठीक नहीं कर सकते हैं। हर मनुष्य के अन्दर विकारों का ताप बढ़ रहा है, उसका परीक्षण कर सके ऐसा थर्मामीटर बनाने की क्षमता किसी वैज्ञानिक में नहीं है। देह के रोग तब मिट सकेंगे जब आत्मा के रोग मिटेंगे। आत्मा है बीज, जब बीज ही स्वस्थ न हो तो उससे उत्पन्न वृक्ष अच्छे फल और फूल कैसे दे सकता है?

रूह को स्वस्थ बनाने स्वयं परमात्मा इस संगमयुग पर रूहानी सर्जन बनकर आये हैं। हर आत्मा का इलाज सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा हो सकता है। आत्मिक ज्ञान आत्माओं में बल भरता है। देखा जाए तो मनुष्य अपने बारे में ही अनजान है। सुखी और स्वस्थ जीवन किसे कहा जा सकता है, उसे यही पता नहीं। सभी के जीवन में तनाव, दुख आदि देखकर वह यही समझता है कि सबके साथ यही हो रहा है। मतलब यही मेरे साथ भी होना चाहिए। आज यदि कोई कहे कि मेरे जीवन में कोई तनाव या दुख नहीं है तो सुन कर सबके कान खड़े हो जाते हैं और आँखें आश्चर्य से बड़ी हो जाती हैं।

एक वक्त था, आदमी अपनी जेब में या पर्स में देवताओं के या किसी गुरु के फोटो रखा करता था। आज सभी के पर्स में ब्लड प्रेशर की दवा, एसिडिटी की दवा, दर्द-निवारक गोलियाँ आदि रखी हुई दिखाई देती हैं। गोलियों के सहारे जीवन चला रहे हैं। तन को ठीक करने के लिये तो लाखों गोलियाँ मिल जाएँगी लेकिन मन को ठीक करने के लिये आध्यात्मिक ज्ञान-गोलियों के इस्तेमाल की आवश्यकता है।

आइये परमात्मा शिव से मिली कुछ ज्ञान-गोलियों से आपको परिचित कराएँ। जब भी कोई बात या परिस्थिति सामने आये और मन को प्रभावित करने लगे तब इन ज्ञान की गोलियों का सेवन करें। मन रूपी पाकेट में इन ज्ञान-गोलियों को संभालकर रखें।

मेरा बाबा : जब भी मन में डर पैदा होने लगे।

खुदा दोस्त : जब अकेला महसूस करें या किसी की सहायता की जरूरत लगे।

फुलस्टॉप : मन में विचारों की खलबली मचे या कोई सवाल उठे।

अंतर्मुखी : जब किसी की, किसी बात या कर्म से फीलिंग आ जाए।

नथिंग न्यू : कोई दुख भरा दृश्य जब सामने आये।

ड्रामा : कोई नुकसान हो जाए।

शुभ भावना-शुभ कामना : जब किसी के लिए मन खट्टा हो जाए।

आत्मिक दृष्टि : किसी की विशेषताओं या कलाओं से मन प्रभावित होने लगे।

निमित्त भाव : अपनी ही विशेषताओं का या सेवाओं का अभिमान आने लगे।

ॐ शान्ति : मन में हलचल पैदा हो।

पवित्रता : कामवासना बढ़ने लगे या विकल्प आने लगें।

नश्वर : किसी के प्रति मोह जागृत हो रहा हो, देहधारियों की याद सताने लगे।

टू लेट : पुरुषार्थ में अलबेलापन या सुस्ती आने लगे।

संगमयुग : जब मन में थकावट महसूस हो।

फालो फादर : मन में जब दुविधा पैदा होने लगे।
अटेन्शन : मन भटकने लगे।
सावधान : माया का आकर्षण होने लगे।
पूर्वज : किसी का दर्द देख स्वयं दुखी होने लगें।
पूज्य : किसी के गलत कर्मों को देख मन परेशान होने लगे।
परमात्मा स्नेह : कभी घुटन महसूस हो।
समर्थ स्वरूप : विचारों में कमजोरी आ जाए।
क्लीन और क्लियर : मन में गलत या गंदे विचार पैदा हो रहे हों।
अतीन्द्रिय सुख : भौतिक साधनों की तरफ बुद्धि जाने लगे।
रिटर्न जर्नी : जब किसी की मृत्यु देख दुखी हो जाएँ।

अगर हम रोज इन ज्ञान की गोलियों का इस्तेमाल करते रहेंगे तो हमारा यह नाजुक और कमजोर मन शक्तिशाली बन जाएगा। वास्तव में परमात्मा शिव की मुरली ही ज्ञान की गोलियों की खान है। जब कभी समस्याओं का अति विकराल रूप सामने आये और कोई भी गोली असर ना करे तो 'मनमनाभव' का एक ही शक्तिशाली इन्जेक्शन लगाएँ जिससे मन के सारे रोग मिट जायेंगे। ❖

बाबा की याद और गौ-सेवा का सुफल

ब्रह्माकुमारी राधा साहू, टोंक (राजस्थान)

मैं पेशे से शिक्षिका हूँ। सन् 2006 की बात है, हमारे विद्यालय के प्राचार्य ने मुझे ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाने का परामर्श दिया। मैं अपने युगल के साथ वहाँ गई। हमने 7 दिन का कोर्स किया और प्रतिदिन शाम के समय मुरली क्लास में जाने लगे। जीवन अच्छा चलने लगा परन्तु एक तूफान आया और किसी ने मेरे पति के कान भर दिए कि इसे वहाँ मत जाने दिया करो। मेरे पति ने मेरा आश्रम जाना बन्द करा दिया। मैं दुखी तो हुई लेकिन हिम्मत नहीं छोड़ी। बाबा को एक ही बात कहती थी, बाबा आप मेरे हो, मैं पवित्र आत्मा आपकी हूँ।

हमारे घर में एक गाय भी है जो सभी की प्रिय है। मेरे पति बेटी से भी बढ़ कर गाय की सेवा-पूजा करते हैं। पहली बार बच्चे के जन्म के समय गाय ने बड़ा कष्ट भोगा और गाय के कारण सारे परिवार को भी बहुत दुख महसूस हुआ। इस बार भी जब बच्चे को जन्म दिया तो गाय ने मरने की दशा में धरती पर गर्दन गिरा दी। हम डॉक्टरों को फोन पर फोन कर रहे थे लेकिन रात के तीन बजे कोई डॉक्टर आने को तैयार नहीं था। जब सभी डॉक्टरों ने मना कर दिया तब गाय को मरते देख मेरे पति ने कहा, यह गाय तो मर जाएगी। मैंने जल्दी से कहा, यह बाबा की गाय है, इसकी रक्षा बाबा ही करेंगे। अमृतवेले साढ़े तीन बजे मैंने बाबा को कहा, बाबा, यह क्या हो रहा है? हाथों से पाली गाय आज मर रही है। तभी अचानक डॉक्टर का फोन आया, कहा, हम आपके घर आ रहे हैं, घर का पता बताओ। पता बताने के बाद डॉक्टर घर आये। सब कहने लगे, अरे, ये तो बड़े डॉक्टर हैं, किसी के घर नहीं जाते, आज रात साढ़े तीन बजे कैसे आ गये? वाह मेरे बाबा वाह! जैसे ही डॉक्टर घर पर आये, पति को भी बाबा पर भरोसा हो गया। गाय भी पूरी तरह स्वस्थ हो गई। अब मेरे पति दिल से बाबा को मानते हैं। मुझे कहते हैं, आश्रम क्यों नहीं जा रही है? यह बाबा का चमत्कार था। लिखते-लिखते खुशी से आँखें भर आई हैं। दिल बार-बार कहता है, वाह बाबा वाह!

मेरी ज़िन्दगी में तू है, मेरे पास क्या कमी है,
मुझे गम नहीं किसी का, ये बहार तूने दी है,
मेरे हाल पर हुई है बाबा तेरी मेहरबानी,
मेरे पास मेरा बाबा, मेरे प्यार की निशानी।

पुण्य तिथि पर विशेष...

अविस्मरणीय यादें

ब्रह्माकुमार गुलजारी, इन्दौर

भाई जी के अंग-संग गुजारे 30 सालों के अनुभव बड़े सुखदाई व सीखने वाले रहे। उनके आभामंडल से कोई भी आत्मा प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाती थी। भाई जी का हर कार्य इतिहास बनता गया क्योंकि उन्होंने सदैव नवीनतम कार्य ही किये।

स्वच्छ मन व स्वच्छ वस्त्र

भाई जी के तीन जोड़े कपड़े हमेशा हैंगर में रखे रहते थे। एक, अमृतवेले पहनने के लिए, दूसरा, सोने के लिए और तीसरा, अगले दिन पहनने के लिए क्योंकि जो कपड़ा एक बार पहन कर सो लिए तो उसे अमृतवेले नहीं पहनते थे। एक दिन मैंने उनमें से एक जोड़ा कपड़े यह सोच कर कपड़ेदानी में डाल दिये कि धोने हैं पर मुझे क्या पता कि भाई जी उन्हें अमृतवेले पहनेंगे। भाई जी ने देखा, कपड़े उस स्थान पर नहीं थे जहाँ उन्होंने रखे थे। मुझसे पूछा कि वो कपड़े कहाँ हैं जो मैंने पहले नम्बर के हैंगर में रखे थे। मैंने कहा, भाई जी, वो तो धोने वाली बाल्टी में डाल दिये। भाई जी ने कहा, यज्ञ का कितना नुकसान हो गया, अब मुझे नये कपड़े पहनने पड़ेंगे। मैंने कहा, भाई जी, ये जो दूसरा जोड़ा रखा है उसे पहन लीजिए। भाई जी ने कहा, नहीं, अमृतवेले बाबा के पास मैं पहना हुआ कपड़ा पहन कर नहीं जा सकता, स्वच्छ कपड़े और स्वच्छ मन से जाना चाहिए तभी बाबा से सच्चा योग व मिलन होता है। तब समझ में आया कि बाबा के प्रति भाई जी का कितना रिगार्ड था।

रहमदिल

भाई जी हमेशा सब पर रहलदिल रहे, लॉ और लव का बैलेंस रख कर चले। गलतियां स्वीकार करने पर भाई जी ने

हमेशा रहमदिल का परिचय दिया। एक बार भाई जी को कुछ भाई-बहनों के साथ पिकनिक पर जाना था। तब उनके लिए खाना मैं ही बनाता था। उस दिन उन्होंने कहा, गुलजारी भाई, मेरे लिए मेथी का पराठा बना देना। मैंने पराठा हमेशा की तरह ज्यादा सेंक कर बना दिया था। भाई जी जैसे ही खाने लगे, खा नहीं पाये। पराठा वैसे का वैसा वापिस मेरे पास लाये और कहा, आप खाओ, बहुत अच्छा बना है, बहुत स्वाद वाला बनाया है। मैंने जैसे ही खाने के लिए तोड़ा, पराठा बहुत ही कड़ा था। मैं समझ गया कि भाई जी नहीं खा पाये हैं। फिर मुझे कहा, मेथी के पराठे को बहुत नहीं सेंका जाता, और ज्यादा कुछ नहीं कहा। इस प्रकार सिखा दिया कि अब ऐसी गलती न करना।

भाई जी देह-त्याग के पाँच माह पूर्व से बीमार चल रहे थे। डाक्टर अलग-अलग विचार देते रहे कि भाई जी इतने दिन के मेहमान हैं लेकिन भाई जी ने अपने योगबल से इन सब बातों को झुठलाया, आगे निकल गये। डाक्टरों ने बताया था कि इस बीमारी में कोई भी मरीज शांत नहीं रह सकता, चिल्लाता है, उछलता है पर भाई जी ने अपने चेहरे पर शिकन तक नहीं आने दी। मैंने पूछा, भाई जी, आपको ज्यादा दर्द तो नहीं हो रहा है, तो कहा, नहीं। किसी को अपने दर्द का आभास तक भी उन्होंने नहीं होने दिया। अंतिम श्वास तक कर्मभोग को परमात्मा की याद से सहज पार किया। ऐसी महान विभूति, हम सबको वैराग्य दिलाकर 25 दिसम्बर, 2015 रात्रि को ठीक 12.30 बजे बापदादा की गोद में समा गए। उन्हें लाख-लाख नमन। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1

2

3

4

5

6

7

8

1.वडोदरा (अलकापुरी)- 'कला संस्कृति महासम्मेलन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.दयाल भाई, हितेश भाई शाह, गुजराती फिल्म अभिनेत्री बहन प्रांजल भट्ट, ब्र.कु.डॉ.निरंजना बहन, ब्र.कु.सतीश भाई, कॉलेज के डीन भ्राता अस्टपुत्रे तथा अन्य। **2.बुटवल (नेपाल)**- ग्लोबल पीस रिट्रीट सेन्टर के अवलोकन के पश्चात् समूह चित्र में हैं स्थानीय विकास राज्यमंत्री भ्राता श्रीप्रसाद जवेगु, निजी सचिव भ्राता उपेन्द्र खनाल, सह-सचिव भ्राता गोपीकृष्ण खनाल, उपमहानगरपालिका के कार्यकारी अधिकृत भ्राता ध्रुव बहादुर खड्का, ब्र.कु.देविका बहन तथा अन्य। **3.दिल्ली (हरिनगर)**- 'गुडबाय डायबिटीज' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मेयर भ्राता श्याम शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के उपकुलपति भ्राता पी.एन.शास्त्री, ब्र.कु.शुक्ला बहन, डॉ.श्रीमंत साहू तथा अन्य। **4.हुक्केरी**- सर्वधर्म सद्भाव संगठन की ओर से ब्र.कु.मृत्युंजय भाई को 'सद्भावना अवार्ड' से सम्मानित करते हुए श्री चन्द्रशेखर स्वामी जी तथा अन्य। **5.गुड़गाँव**- रियो पैरा ओलम्पिक खेल-2016 में शॉट-पुट में रजत पदक जीतने वाली दीपा मलिक को एक हजार, एक सौ ग्यारह गुलाब के फूलों से बना गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.संध्या बहन, ब्र.कु.सोनिका बहन तथा डॉ.दीपक हरके। **6.मौड़मण्डी (बठिण्डा)**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, पंजाब के कैबिनेट मंत्री भ्राता जनमेजा सिंह सेखों, ब्र.कु.कैलाश बहन तथा ब्र.कु.सुदेश बहन। **7.शाहगंज-जौनपुर**- शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए उ.प्र.के ऊर्जा तथा नियोजन मन्त्री भ्राता शैलेन्द्र यादव, ब्र.कु.अनीता बहन तथा अन्य। **8.वाशी (नवी मुंबई)**- 'परमात्म ज्ञान द्वारा स्वर्णिम संसार की स्थापना' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु.शीला बहन, न्यू मुंबई महानगरपालिका महापौर भ्राता सुधाकर सोनावने, विधायक भ्राता संदीप नायक, विधायक भ्राता नरेन्द्र पाटिल, नगरसेवक भ्राता प्रकाश मोरे तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : December, 2016.

नई दिल्ली-
भारत के गृहमंत्री भ्राता राजनाथ सिंह को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य समूह चित्र में।

रायपुर-
छ.ग.के राज्यपाल महामहिम भ्राता बलरामदास टण्डन को भाई दूज के अवसर पर आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.कमला बहन। साथ में ब्र.कु.सविता बहन।

जयपुर (दुर्गापुरा)-
राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष भ्राता कैलाशचन्द्र मेघवाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सन्नू बहन।

दिल्ली (सिविल लाइन)-
मुख्यमंत्री भ्राता अरविंद केजरीवाल को दीपावली की शुभकामनाएँ देते हुए ब्र.कु.मीरा बहन। साथ में अन्य भाई-बहनें।